Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> **कायर**
>
> जे कायर करें पचखांण, ते विकलाइ करें।
> त्यां जीतम जनम बिगाड़ियो।।
>
> कायर आदमी जिस संकल्प को स्वीकार करता है उस वह तोड़ देता है। उसका जीवन बिगड़ जाता है।
>
> – आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली | वर्ष 26 | अंक 43 | 28 जुलाई - 03 अगस्त, 2025 | प्रत्येक सोमवार | प्रकाशन तिथि : 26-07-2025 | पेज 16 | ₹ 10 रुपये

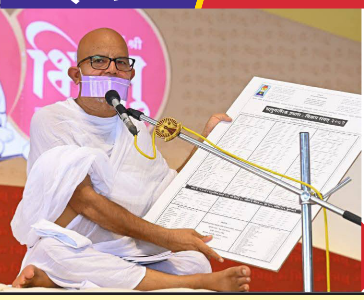

जीवन में हो संवर को बढ़ाने का प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 02

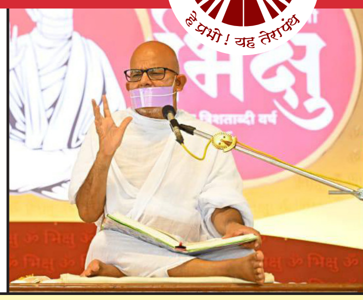

दु:ख से स्पृष्ट होने पर भी नहीं बनें व्याकुल : आचार्यश्री महाश्रमण
पेज 16

Address Here

संयोगों से विमुक्त होता है साधु : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
20 जुलाई, 2025

वीर भिक्षु समवसरण में तेरापंथ धर्मसंघ के राम, हृदयहार आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के आधार पर अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा – दुनिया में दो मार्ग हैं: एक संसार का मार्ग और दूसरा मोक्ष का मार्ग। संसार के मार्ग पर बढ़ने वाला जन्म-मरण की परंपरा को आगे बढ़ाता है, जबकि मोक्ष के मार्ग पर आगे बढ़ने वाला जन्म-मरण की परंपरा से विमुक्त हो जाता है। आयारो आगम में बताया गया है कि जो वीर पुरुष होते हैं, वे महायान पर बढ़ते हैं। महायान यानी महापथ, महामार्ग – मोक्ष का मार्ग महायान है। क्षपक श्रेणी मोक्ष का ही मार्ग है। क्षपक श्रेणी लेने वाला निश्चित रूप से उसी जीवन के बाद मोक्ष को प्राप्त करेगा, अतः क्षपक श्रेणी का मार्ग महायान है।

क्षपक श्रेणी से पहले साधुता लेनी होगी। साधु बनने के लिए आवश्यक है – संयोग का परित्याग करना। संसार में कई प्रकार के संबंध होते हैं – पिता-पुत्र, दादा-पोता, नाना-दोहित्र आदि। दीक्षा लेनी है तो संबंधों को छोड़ना होगा। उत्तरज्झयणाणि में कहा गया है कि साधु कैसा होता है – संयोग से विमुक्त, संबंधातीत चेतना वाला, सांसारिक संबंधों से ऊपर उठने वाला। एक गृहस्थ सांसारिक संबंधों से बंधा होता है, इसलिए उसे संबंधियों के किसी कार्यक्रम में जाना पड़ता है, संबंध निभाना होता है, परंतु एक साधु संबंधों को छोड़ चुका होता है – सांसारिक संबंधों से वह एक सीमा तक मुक्त होता है। साधु अणगार होता है, भिक्षु होता है। साधु की माधुकरी वृत्ति होती है – उसी से उसका भोजन का कार्य हो जाता है। साधु को गृहस्थ के परिवार में क्या हो रहा है आदि बातों में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए।

साधु धर्मोपदेश दे, तत्त्वज्ञान की बात बताए, त्याग और प्रत्याख्यान कराए, जीवन को धार्मिक ढंग से जीने की प्रेरणा दे – यह कार्य वह कर सकता है। आयारो में कहा गया है कि साधु लोक के संयोग का वमन करने वाला, सांसारिक संबंधों को त्यागने वाला होता है। धन, परिवार और शरीर का भी मोह छोड़ देना चाहिए – उसका वमन कर देना चाहिए। इन संबंधों को छोड़कर महायान पर चलें, आगे से आगे बढ़ें। साधु असंयमित जीवन की इच्छा न करें, दीर्घजीवी होने की भी कामना न करें। जितना भी जीवन मिले, उसे संयमपूर्वक, त्यागपूर्वक और समता के साथ जिएं।

गृहस्थ भी, जितना संभव हो, अपना जीवन धर्म-साधना से युक्त बनाए। प्रश्न उठ सकता है – धर्म मुझे क्या देगा? धर्म आत्मा का कल्याण भी करता है और धर्म से जुड़े संदर्भ में भौतिक वस्तुएं भी प्राप्त हो सकती हैं।

(शेष पेज 13 पर)

आज्ञा अनुसार चलने से संभव है कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
21 जुलाई , 2025

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि श्रद्धावान व्यक्ति आज्ञा के अनुसार आचरण करता है, अनुसरण करता है।

साधना के क्षेत्र में श्रद्धा का भी बहुत महत्त्व है। अगर श्रद्धा न हो, मोक्ष के प्रति रुचि न हो, कोई आध्यात्मिक आकर्षण न हो, तो वह आदमी कैसे अध्यात्म के क्षेत्र में आरोहण कर सकेगा? इसलिए साधक की पहली कसौटी है कि श्रावक में सम्यक् श्रद्धा हो।

सम्यक् श्रद्धा और सम्यक् रुचि होती है, तो धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में आगे बढ़ा जा सकता है। आगम अध्ययन के प्रति भी श्रद्धा और रुचि होती है, तो कुछ सहयोग मिल जाने से आदमी आगम के ज्ञान में आगे बढ़ सकता है। जिस कार्य के प्रति श्रद्धा व निष्ठा हो, वह कार्य सफलता को प्राप्त हो सकता है। इच्छा और श्रद्धा से किया जाने वाला उपवास अथवा अन्य किसी प्रकार की तपस्या का अच्छा प्रभाव होता है। आगम में कहा गया है कि आदमी श्रद्धा व आज्ञा से चले, तो वह मेधावी बन सकता है। आगम वाणी को आधार मानकर धर्म के रास्ते पर चलें, तो मानव जीवन का कल्याण हो सकता है। यदि आदमी चोरी न करे, झूठ-कपट न हो, हत्या न करे, इन्द्रियों का असंयम न हो—तो आदमी का

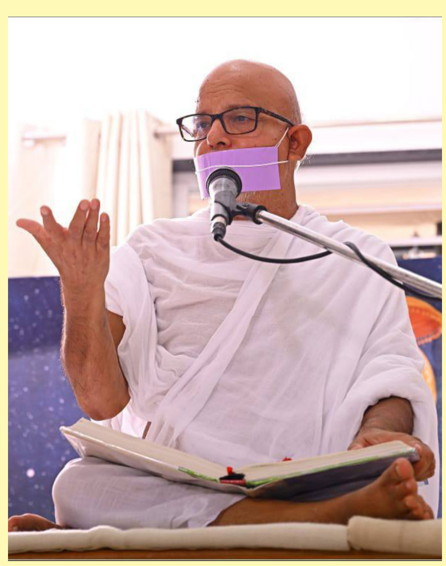

भला क्या नुकसान होगा? अच्छा, संयमयुक्त जीवन जीना भी तो अच्छी बात है और यदि पुनर्जन्म है, तो फिर आदमी का जीवन भी अच्छा हो सकता है। इसलिए आयारो में कहa गया है कि श्रद्धा हो और आज्ञा के अनुसार चलने वाला हो, तो कल्याण संभव होता है।

कई बातें हेतुगम्य होती हैं—उन्हें तर्क से समझा जा सकता है, तो कई बातें अहेतुगम्य होती हैं—उन्हें तर्क से नहीं समझा जा सकता, उन्हें आज्ञा की बातों पर विश्वास कर स्वीकार किया जा सकता है। जहां श्रद्धा होती है, वहां आज्ञा सहर्ष शिरोधार्य हो सकती है। इसलिए आदमी को अपने भीतर आस्था व श्रद्धा के भाव को पुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में हो संवर को बढ़ाने का प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
16 जुलाई, 2025

आयारो आगम पर अपनी मंगलमय अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया— कर्म का आदान मुख्य रूप से कषाय हैं। कर्मों के बंधन के लिए दो चीजें जिम्मेदार हैं—कषाय और योग। बंध के चार भेद हैं—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश। प्रकृति और प्रदेश बंध का सम्बन्ध योग के साथ तथा स्थिति और अनुभाग बंध का सम्बन्ध कषाय के साथ है। पापकर्म के बंधन में मुख्य भूमिका मोहनीय कर्म की होती है और मोहनीय कर्म का मुख्य तत्त्व कषाय है।

कषाय के चार स्तर हैं—अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी और संज्वलन। अनंतानुबंधी कषाय की सघनता संज्वलन कषाय तक क्रमशः कम होती जाती है। मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियाँ होती हैं—25 चारित्र मोह की और 3 दर्शन मोह की। जहां कषाय नहीं होता, वहां बंधन नाममात्र का होता है—बंधा, भोगा, झड़ा। इस स्थिति में ग्यारहवें गुणस्थान से तेरहवें गुणस्थान तक ईर्यापथिक बंध होता है। केवल सातवेदनीय का बंध होता है।

सकषाय अवस्था अर्थात पहले से दसवें गुणस्थान तक का बंध साम्परायिक बंध होता है। चौदहवें गुणस्थान में कषाय और योग दोनों नहीं होते, अतः यह अबंध की स्थिति होती है। अयोगी अबंध होता है। संवर की उत्कृष्ट साधना चौदहवें गुणस्थान में होती है। इस गुणस्थान में पाँचों संवर एक साथ रहते हैं। गुणस्थानों की प्राप्ति में संवर का योगदान होता है।

सम्यक्त्व संवर के साथ आंशिक व्रत संवर होने पर पाँचवाँ गुणस्थान, पूर्ण संवर होने पर छठा गुणस्थान, सम्यक्त्व, व्रत और अप्रमाद—इन तीन संवरों के होने पर सातवाँ गुणस्थान, अकषाय आने पर ग्यारहवाँ, बारहवाँ, तेरहवाँ गुणस्थान, और अयोग संवर आने पर चौदहवाँ गुणस्थान हो जाता है।

साधना में दो ही मुख्य चीजें हैं—संवर और निर्जरा। संवर ही मुख्य रूप से मोक्ष का कारण है। यद्यपि निर्जरा भी मोक्ष में सहायक है, लेकिन यदि कोई व्यक्ति केवल संवर की ही साधना करता है तो उसकी निर्जरा अवश्य होगी। संवर में इतनी शक्ति है कि इसकी साधना करने वाला आए हुए कर्मों का वेदन करने वाला बन जाता है।

श्रावक सामायिक करते हैं, वह भी कर्मों को रोकने का ही कार्य है। तेरापंथ धर्मसंघ में 6 कोटि, 8 कोटि और 9 कोटि—तीनों ही प्रकार की मान्यता है। गृहस्थ के नौ कोटि त्याग सापेक्ष रूप से होते हैं, वे उतने विशुद्ध नहीं हो सकते, जितने साधु के नौ कोटि त्याग होते हैं। एक साधु के यावज्जीवन नौ कोटि त्याग होते हैं। एक गृहस्थ सामायिक ग्रहण करने से पूर्व जो सावद्य क्रिया करता है, उससे संबंध टूटता नहीं है। वह क्रिया सामायिक के दौरान भी चालू रहती है। इसलिए सम्पूर्ण नौ कोटि की सामायिक साधु की ही होती है। सामायिक में अनेक सावद्य प्रवृत्तियों से बचाव हो जाता है। सामायिक के दौरान जो शुभ योग होता है, उससे निर्जरा हो जाती है। व्यक्ति को अपने जीवन में जितना संवर हो सके, उसका प्रयास करना चाहिए। परिग्रह, द्रव्य सीमा, हरियाली, लीलोती सब्जियों का त्याग आदि से बहुत त्याग संभव है और यही त्याग, संकल्प ही धर्म है।

नौ तत्त्वों में मोक्ष के साधक तत्त्व दो ही हैं—संवर और निर्जरा। गृहस्थ को अपने जीवन में जितना संवर बढ़ सके, उतना बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए और साथ ही निर्जरा का भी प्रयास करते रहना चाहिए।

इस प्रकार आयारो में कहा गया है कि कर्मों के आदान को निषिद्ध कर, अवरुद्ध कर, रोक कर साधक अपने कर्मों का भेदन करने वाला बन सकता है। इसके बाद परम पूज्यवर ने तेरापंथ प्रबोध के पद्यों का संगान कर उनकी व्याख्या की।

अहमदाबाद चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा वि.सं. 2082 का पावस प्रवास पुस्तिका तथा फड़द, आचार्यश्री के करकमलों द्वारा लोकार्पित किए गए। उपासक शिविर के संदर्भ में, उपस्थित उपासक-उपासिकाओं को आचार्यश्री ने उप-संपदा प्रदान करते हुए आत्मिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

प्रमाद से बचकर अभय के नंदनवन में रमण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
17 जुलाई, 2025

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने वीर भिक्षु समवसरण में पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा — आयारो आगम में कहा गया है : 'सव्वतो पमत्तस्स भयं सव्वतो अप्पमत्तस्स णत्थि भयं।' इस सूत्र में हम प्रमाद और भय, तथा अप्रमाद और अभय का दर्शन कर सकते हैं। भय और प्रमाद, तथा अभय और अप्रमाद का आपस में संबंध है। शास्त्र में बताया गया है कि प्रमत्त को सब ओर से भय होता है, जबकि अप्रमत्त को किसी भी ओर से भय नहीं होता।

प्रमत्त वह होता है जो कषाय से अभिभूत आत्म-परिणाम वाला होता है। कषाय अर्थात् क्रोध, मान, माया, लोभ — या संक्षेप में, राग और द्वेष। जो राग से दबा हुआ है, जो द्वेष से आक्रांत है, उसे भय हो सकता है।

कषाय और राग-द्वेष के दो रूप होते हैं: एक सुषुप्त अवस्था का कषाय, दूसरा जागृत अवस्था का कषाय। साधु और गृहस्थ दोनों छद्मस्थ हैं। वर्तमान समय में साधु अधिकतम सातवें गुणस्थान तक विकास कर सकता है, परंतु वहाँ ज्यादा समय तक ठहर नहीं सकता — वापस नीचे आना पड़ता है। गृहस्थ सामान्यतः पाँचवें गुणस्थान से आगे नहीं जा सकते।

वर्तमान में साधु और श्रावक दोनों के भीतर मोहनीय कर्म विद्यमान है। जब मोह कर्म का संयोग होता है, तो योग अशुभ होता है, और वियोग होता है तो योग शुभ होता है। इस समय साधु और श्रावक प्रवचन में बैठे हैं, तो स्थूलतः शुभ योग में हैं।

प्रश्न उठता है: क्या पाँचवें, छठे, सातवें गुणस्थान में मोहनीय कर्म नहीं है? उत्तर है — मोहनीय कर्म तो है, पर वह इस रूप में उत्तेजित नहीं है कि जिससे योग अशुभ बन जाए। वह सुषुप्त अवस्था में है। जब कोई गुस्से में होता है, झगड़ा कर रहा होता है, तो उस समय कषाय उत्तेजित अवस्था में होता है। इस प्रकार कषाय के दो रूप माने जाते हैं।

शास्त्र में कहा गया है कि प्रमत्त को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव — सब ओर से भय हो सकता है। उदाहरणतः, कोई व्यक्ति यदि राग में है, तो उसे अपने धन की सुरक्षा का, प्रिय वस्तु के वियोग का भय हो सकता है। द्वेष होने पर भी भय हो सकता है — जैसे किसी अप्रिय व्यक्ति से सामना न हो जाए।

प्रमाद का एक और रूप है — गलती। जो गलती करता है, उसे भी भय हो सकता है; गलती करने पर दंड आदि का भय संभव है। भय छठे गुणस्थान तक हो सकता है; सातवें गुणस्थान में भय नहीं होता।

मनुष्य जितना प्रमाद से बचे, अपने नियमों का अतिक्रमण न करे, और कषायों से परास्त न हो तो वह व्यक्ति अभय के नंदनवन में रमण कर सकता है। हम भी भय में न रहें और किसी भी प्राणी को भयभीत न करें। किसी पशु-पक्षी के खाने में, बैठने में या नींद में विघ्न न डालें — यह प्रयास होना चाहिए।

देश भर में हुआ मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के परम आशीर्वाद व इंगितानुसार अभातेयुप पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमार जी के निर्देशन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में दिनांक 13 जुलाई 2025 को देश विदेश की अनेकों शाखा परिषदों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में विराजित चारित्रात्माओं के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यशाला का सुव्यस्थित रूप में आयोजन किया गया

अहमदाबाद में विराजित युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा, सहमंत्री लक्की कोठारी की विशेष उपस्थिति में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

परम पूज्य आचार्य प्रवर ने उपस्थित बच्चों को मंत्र दीक्षा ग्रहण करवाई और बच्चों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करवाया। मंत्र दीक्षा के राष्ट्रीय प्रभारी अजीत छाजेड़ ने अपनी अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद एवं अमरईवाड़ी ओढ़व के अध्यक्ष अशोक पगारिया एवं प्रदीप बागरेचा भी उपस्थित थे। ज्ञानशाला के बच्चों ने पूज्य प्रवर के समक्ष अपनी प्रस्तुति दी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के पदाधिकारीगण एवं युवादृष्टि के संपादक विपिन पितलिया आदि द्वारा आचार्य भिक्षु को समर्पित युवादृष्टि के विशेषांक 'आदिपुरुष' की प्रति पूज्य प्रवर को निवेदित की गई।

देश भर में आयोजित मंत्र दीक्षा कार्यशालाओं में नमस्कार महामंत्र के प्रति बच्चों की आस्था सुदृढ़ीकरण करवाने के लक्ष्य के साथ प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र के उच्चारण व मंत्र दीक्षा के संकल्प दिलवाए गए। मंत्र दीक्षा कार्यशाला में 150 से अधिक परिषदों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता दर्ज करवाते हुए सफल आयोजन किया, जिसमें 2100 से अधिक 9 वर्ष के बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की।

राष्ट्रीय सह प्रभारी संतोष सेठिया ने बताया कि मंत्र दीक्षा के देश व्यापी कार्यक्रम में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ, उपासक श्रेणी, जैन संस्कारक, समस्त शाखा परिषदों एवं अभातेयुप लाडनूं कार्यालय का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

आत्मिक सुख प्राप्ति का श्रेष्ठ प्रयोग है प्रेक्षा ध्यान

टोहाना।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार प्रेक्षा वाहिनी के तत्वावधान में समणी जयंतप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मासिक प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया, जिसमें लगभग 65 साधकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेक्षा गीत के संगान से हुआ। समणी जयंत प्रज्ञा जी ने प्रेक्षा ध्यान के विभिन्न प्रयोग कराते हुए उनके महत्व को समझाया। उन्होंने बताया कि श्वास प्रेक्षा, प्रेक्षा ध्यान का एक महत्वपूर्ण अंग है। हमें आने-जाने वाली श्वास पर ध्यान देना चाहिए, और यही प्रेक्षा ध्यान की शुरुआत है। प्रेक्षा ध्यान आत्मिक सुख प्राप्ति का एक श्रेष्ठ प्रयोग है।

समणी सन्मतिप्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जैन धर्म में ध्यान की पद्धति का प्रारंभ भगवान महावीर से हुआ है। ध्यान और तपस्या के माध्यम से ही केवलज्ञान की प्राप्ति संभव है। उन्होंने कहा कि प्रेक्षा का अर्थ है गहराई से देखना एवं आत्मा का अनुभव करना, जबकि ध्यान का अर्थ है एकाग्रता की साधना। ध्यान से पहले भाव-क्रिया, अर्थात जागरूकता का विकास आवश्यक है। ध्यान के लिए हल्का, सुपाच्य, स्वच्छ और शाकाहारी भोजन आवश्यक है। ध्यान करते समय प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए। ध्यानी को सोच-समझकर बोलना चाहिए और मितभाषी होना चाहिए। उन्होंने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ जी का कहना था कि 'अनावश्यक न बोलना भी मौन की एक उत्कृष्ट विधा है।'

दायित्वबोध कार्यशाला का सफल आयोजन

उधना।

साध्वी मधुबालाजी के सान्निध्य में दायित्वबोध कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के श्रवण से हुआ। तत्पश्चात परिषद की भजन मंडली द्वारा विजय गीत प्रस्तुत किया गया।

शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। तेयुप उधना के नव मनोनीत अध्यक्ष कमलेश बाफना ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए साध्वीवृंद, अतिथिगण एवं उपस्थित युवाओं का अभिनंदन किया। साध्वी मंजुलयशाजी ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में युवाओं को मन और कर्म से सच्चा युवा बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने टीम भावना का महत्व बताते हुए कहा कि 'टीम का अर्थ है—मिलकर लक्ष्य की ओर बढ़ना, आत्मकल्याण की दिशा में निरंतर प्रयास करना और संघ एवं संघपति के प्रति पूर्ण निष्ठा रखना। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भी अपने प्रेरणादायक विचार रखते हुए युवाओं को सेवा, संस्कार और संगठन के पथ पर अग्रसर होने का संदेश दिया।

कार्यशाला का समापन साध्वी मधुबालाजी के मंगलपाठ के साथ हुआ। साध्वीश्री के आशीर्वचनों ने युवाओं में नई ऊर्जा, उमंग एवं सकारात्मकता का संचार किया। कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन परिषद के सहमंत्री मनोज डागा ने करते हुए साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता एवं उपस्थित अतिथियों व युवाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन उधना परिषद के मंत्री अनिल सिंघवी द्वारा किया गया।

चातुर्मासिक प्रवेश पर स्वागत कार्यक्रम

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ सभा भवन, में ज्ञानशाला के नन्हे विद्यार्थियों और कन्या मंडल ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि हिमांशु कुमार जी एवं मुनि हेमंत कुमार जी का भावपूर्ण स्वागत एवं अभिनंदन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ छोटे बच्चों के मंगलाचरण से हुआ, तत्पश्चात बड़े बच्चों ने संगीत उपकरणों के माध्यम से मुनिद्वय का भावभीना स्वागत किया।

इसके पश्चात प्रस्तुत की गई प्रेरणादायक लघु नाटिका में रोजाना प्रवचन में भाग लेने, जूठा नहीं छोड़ने, रात्रिभोजन का त्याग, जमीकंद त्याग जैसे जैन जीवन मूल्यों को सहजता और सुंदरता से प्रस्तुत किया गया।

मदुरै कन्या मंडल द्वारा 'आज की पीढ़ी के बच्चे कूल दिखने के लिए अपने डिवोशनल वैल्यू से दूर जा रहे हैं' विषय पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसमें यह दर्शाया गया कि मुनिश्री के दर्शन के बाद उनकी सोच में परिवर्तन आया और वे छोटे-छोटे प्रयासों से अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। मुनि हिमांशु कुमार जी ने तपस्या विषय पर प्रेरणादायक शैली में मार्गदर्शन देते हुए कहा कि बड़ी तपस्याओं से पहले छोटी-छोटी तपस्याएं अपनानी चाहिए। संयम की मुद्रा और व्यावहारिक उपायों द्वारा भी आत्मिक प्रगति संभव है। इस चातुर्मास में प्रत्येक श्रावक-श्राविका को कोई न कोई तपस्या का संकल्प अवश्य लेना चाहिए।

मुनि हेमंत कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि श्रावक जीवन एक आदर्श होता है — वह दर्पण के समान होता है, जैसा है वैसा ही दिखाई देता है। सत्य, अनुशासन और नैतिक आचरण उसके जीवन के आधार होने चाहिए।

कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल प्रभारी लता कोठारी द्वारा की गई और नाटिका का कुशल संचालन भावना पारख ने किया।

कार्यक्रम का कुशल संयोजन ज्ञानशाला संयोजिका बबीता लोढ़ा एवं प्रशिक्षिका मधु पारख द्वारा किया गया। आयोजन में सभी प्रशिक्षकों का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
28 जुलाई - 03 अगस्त, 2025

संक्षिप्त खबर

सभा प्रतिनिधिमंडल सेवा हेतु पंहुचा गुरु चरणों में

गंगाशहर। पिछले कुछ वर्षों की भांति इस वर्ष भी श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के चातुर्मास प्रवास के उपलक्ष्य में अहमदाबाद में चौका सेवा प्रारंभ की गयी। सेवा व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु उपाध्यक्ष नवरतन बोथरा, संगठन मंत्री मांगीलाल लूणिया सहित सभा के वरिष्ठ पदाधिकारी अहमदाबाद पहुंचे। उन्होंने मुनि कमलकुमार जी, साध्वी विशदप्रज्ञा जी व साध्वी लब्धियशा जी से मंगलपाठ श्रवण कर यात्रा प्रारंभ की। अहमदाबाद पहुँचकर प्रतिनिधिमंडल ने आचार्य श्री महाश्रमणजी, मुख्यमुनिश्री, साध्वीप्रमुखा जी व अन्य चारित्रात्माओं के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। नवरतन बोथरा ने बताया कि मुंबई और सूरत के बाद अब अहमदाबाद में भी गंगाशहर सभा द्वारा सामूहिक चौका सेवा का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन के माध्यम से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं गुरुदेव के सान्निध्य में सेवा कर सकेंगे।

स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

राजाजीनागर। तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, श्रीरामपुरम में आचार्य श्री भिक्षु के 300वें जन्म दिवस तथा 266वें तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में रियायती शुल्क पर विटामिन B12, विटामिन D3 एवं रीनल फंक्शन की जांच समायोजित की गई। शिविर का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। इस शिविर में कुल 56 सदस्य लाभान्वित हुए। तेयुप की ओर से निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, राजेश देरासरिया एवं जयंतीलाल गांधी ने सक्रिय सेवाएं प्रदान कीं।

प्रमाण पत्र वितरण

टोहाना। आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या समणी जयंतप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जैन विश्व भारती, लाडनूं के समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित विभिन्न परीक्षाओं के प्रमाण पत्रों के वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समणीजी ने कहा कि जैन परीक्षाएं ज्ञानार्जन का उत्कृष्ट माध्यम हैं एवं तत्वज्ञान अर्जन का श्रेष्ठ मार्ग हैं। उन्होंने सभी सफल परीक्षार्थियों को मंगलकामनाएं देते हुए कहा कि वे परीक्षा में उत्तरोत्तर विकास करते हुए आगे बढ़ें और ज्ञान का अर्जन करें तथा गुरुदेव के सपने को साकार करें। इस अवसर पर जैन विद्या परीक्षा के 80 प्रमाण पत्र, आगम मंथन प्रतियोगिता के 22 प्रमाण पत्र तथा सम्यक दर्शन कार्यशाला के प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया। इस अवसर पर जैन विद्या परीक्षा की व्यवस्थापिका अंजू जैन एवं आगम मंथन प्रतियोगिता की आंचलिक संयोजिका उषा जैन को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। सभा अध्यक्ष विजय कुमार जैन ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि परीक्षाएं धर्मसंघ के विकास में एक महत्वपूर्ण अवयव हैं। अधिक से अधिक लोगों को इन परीक्षाओं में भाग लेना चाहिए। सभा के मंत्री सुभाष जैन ने कार्यक्रम का संयोजन करते हुए कहा कि परीक्षा ज्ञान अर्जन एवं भावनात्मक विकास का एक सशक्त माध्यम है।

तप अनुमोदना में भक्ति संध्या का आयोजन

केजीएफ। साध्वी पावनप्रभा जी के सानिध्य में स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में तप अनुमोदना में भक्ति संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया। निकिता हिंगड़, सोनाली हिंगड़ के ग्यारह की तपस्या के उपलक्ष में गायक ऋषि दुगड़ ने अपनी प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया। गायक धर्मेश बोथरा ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के प्रायोजक दिलीप हिंगड़ रहे। कार्यक्रम में सभी जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

आत्म कल्याण के लिए सर्वोत्तम समय है चातुर्मास

बायतु।

आचार्य महाश्रमण की विदुषी सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखाजी ठाणा-5 का स्थानीय तेरापंथ भवन में चातुर्मास के लिए मंगल प्रवेश हुआ। प्रवेश रैली के रूप में नाहटा भवन, चवा रोड से मेन बाजार, तुलसी मार्केट होते हुए महाप्रज्ञ मार्ग स्थित तेरापंथ भवन तक रैली निकाली गई, जो सभा में परिवर्तित हुई।

इस अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति तपोमय संस्कृति रही है। अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता और भाईचारा इसके प्राण तत्व हैं, और इसी संस्कृति के संवाहक होते हैं संत, जो स्वयं की साधना के साथ-साथ मानव कल्याण के लिए प्रयासरत रहते हैं।

साध्वी श्वेतप्रभाजी ने कहा कि चातुर्मास सुषुप्त चेतना को जागृत करने का समय है और सभी को इस अमूल्य समय का लाभ लेना चाहिए।

साध्वी धवलप्रभाजी ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमें तेरापंथ धर्मसंघ मिला और गुरु कृपा से अपनी मातृभूमि में चौमासा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

साध्वी मार्दवयशाजी ने अपनी कर्मभूमि पर सभी aसमाज को चातुर्मास में सक्रियता से भाग लेने की प्रेरणा दी। राकेश जैन, सम्पत बालड़, रमेश चोपड़ा, अमृत बालड़, मनोज चोपड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष कविता भंसाली, महिला मंडल मंत्री (बालोतरा) रेखा बालड़, बायतु सरपंच गोमाराम पोटलिया, मदन बालड़, नरेश वडेरा, व्याख्याता लुंभा राम (भीमड़ा) सहित ज्ञानशाला के बच्चों, कन्यामंडल एवं महिला मंडल ने भाषण, गीत, कविता, नाट्य आदि प्रस्तुत किए।

आभार ज्ञापन सभा अध्यक्ष राकेश जैन ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रज्ञा जैन ने किया।

दायित्व हस्तान्तरण एवम् शपथ ग्रहण समारोह

जयपुर।

सत्र 2025-26 हेतु नवगठित प्रबंध समिति का शपथ ग्रहण समारोह मुनि तत्वरूचि जी 'तरुण' के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से भिक्षु साधना केंद्र, श्याम नगर में आयोजित हुआ। अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष एवं संस्कारक अविनाश नाहर ने जैन संस्कार विधि अनुसार शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न करवाया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष रवि छाजेड़ को निवर्तमान अध्यक्ष गौतम बरड़िया ने पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

इसके पश्चात अध्यक्ष रवि छाजेड़ ने अपनी टीम में उपाध्यक्ष प्रथम प्रवीण जैन, उपाध्यक्ष द्वितीय मोहित गधैया, मंत्री शरद बरड़िया, सहमंत्री प्रथम नवीन जैन, सहमंत्री द्वितीय सिद्धार्थ सोलंकी, कोषाध्यक्ष अनिल दुगड़, संगठन मंत्री जयंत भूरा के साथ-साथ कार्यकारिणी एवं क्षेत्रीय सदस्यों को मनोनीत करते हुए उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि युवक सेवा और समर्पण के द्वारा समाज के विकास में अपनी शक्ति का नियोजन करें तथा स्वयं के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के विकास में सहायक बनने का प्रयास करें। तत्पश्चात निवर्तमान अध्यक्ष गौतम बरड़िया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष रवि छाजेड़ को औपचारिक रूप से दायित्व हस्तांतरित किया।

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत वाटर कूलर का उद्घाटन

पाली।

अभातेममं निर्देशित समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल, पाली द्वारा वाटर कूलर का उद्घाटन तेरापंथ सभा भवन, पाली में किया गया।

उद्घाटन समारोह में तेरापंथ समाज पाली की सभी संस्थाओं के अध्यक्ष एवं मंत्रीगण उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र के संगान से की गई। सभी अतिथियों ने तेरापंथ महिला मंडल को इस सेवा कार्य के लिए बधाई प्रेषित की।

जल संरक्षण एवं जल सेवा के प्रति जागरूकता को ध्यान में रखते हुए तेरापंथ महिला मंडल, पाली द्वारा दो वाटर कूलर पब्लिक मॉर्डन स्कूल में भी लगाए गए।

यह विद्यालय मंद बुद्धि, विकलांग और आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए एक निःशुल्क शिक्षण संस्थान है, जहाँ तेरापंथ महिला मंडल समय-समय पर सहयोग प्रदान करता रहता है।

कार्यक्रम में महिला मंडल मंत्री सीमा मरलेचा ने पानी के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। महिला मंडल की अध्यक्षा सुषमा डागा ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस अवसर पर पाली जैन संघ अध्यक्ष रमेश मरलेचा की गरिमामयी उपस्थिति रही। तेरापंथ समाज की सभी संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री तथा प्रायोजक परिवार भी उपस्थित रहे।

महिला मंडल की सदस्य इस कार्यक्रम में सक्रिय रूप से उपस्थित थीं। वाटर कूलर के प्रायोजक रमेश कुमार-ललित कुमार मरलेचा परिवार और प्रकाश-सुषमा डागा परिवार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सवा लाख जप का हुआ अलौकिक अनुष्ठान

राजराजेश्वरीनगर। तेरापंथ के आद्य प्रणेता आचार्य श्री भिक्षु के 300वें जन्म वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर, साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, राजराजेश्वरी में 'ॐ श्री भिक्षु नमो नमः' का सवा लाख जाप एक अलौकिक अनुष्ठान के रूप में संपन्न हुआ। एक सुर, एक लय और एक तान में गूँजते इस जाप से संपूर्ण तेरापंथ भवन गुंजायमान हो उठा। साध्वीश्री जी ने सभी से आह्वान किया कि हमें अपने हृदय में विराजमान, अपनी आस्था के केंद्र को जाप, त्याग एवं तपस्या की भेंट समर्पित करनी है। साध्वीश्री ने तीन दिवसीय अखंड जाप में सभी श्रद्धालुओं की सक्रिय सहभागिता हेतु आह्वान किया। श्रावक-श्राविकाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही और सभी ने इस अलौकिक आनंद का अनुभव किया।

शपथ ग्रहण समारोह

तिरूपुर। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, तिरुपुर की वर्ष 2025-27 की नव मनोनीत अध्यक्षा सरिता श्यामसुखा की अध्यक्षता में मंडल के पदाधिकारीगण एवं कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। निवर्तमान अध्यक्षा नीता सिंघवी द्वारा शपथ ग्रहण प्रक्रिया को संपन्न कराया गया। जैन संस्कारक जितेंद्र भंसाली ने जैन विधि से शपथ प्रक्रिया संपन्न करवाई। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया एवं युवक परिषद अध्यक्ष श्रेयांश नाहर अपनी कार्यकारिणी टीम के साथ उपस्थित रहे। अध्यक्षा सरिता श्यामसुखा ने उपाध्यक्ष अलका बैद एवं प्रीति भंडारी, मंत्री रेखा सिंघवी, सह मंत्री (प्रथम) पूनम कोठारी, सह मंत्री (द्वितीय) अर्चना बोथरा, कोषाध्यक्ष श्वेता कोठारी और प्रचार प्रसार मंत्री सोनम अंचलिया के नामों की घोषणा की।

गुवाहाटी। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी एवं मुनि रमेश कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के सत्र 2025-27 के नवमनोनीत अध्यक्ष संजय चौरड़िया एवं उनकी नई कार्यसमिति का शपथ विधि समारोह स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ अध्यक्ष बजरंग बैद के स्वागत वक्तव्य से हुआ। इसके पश्चात संयुक्त चुनाव अधिकारी मानमल लोढ़ा ने नवमनोनीत अध्यक्ष के नाम की घोषणा की। तत्पश्चात निवर्तमान अध्यक्ष बजरंग बैद ने संजय चौरड़िया को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवमनोनीत अध्यक्ष संजय चौरड़िया ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए उपाध्यक्ष नवरतनमल गधैया और सरोज बरड़िया, मंत्री रंजना बरड़िया, सहमंत्री डॉ. सारिका दुगड़ और राजकुमार भटेरा, कोषाध्यक्ष नरेंद्र लोढ़ा, संगठन मंत्री राखी बैंगानी, प्रचार-प्रसार मंत्री दीपक सेठिया एवं कार्यकारिणी सदस्यों को नामित किया। अणुविभा के असम एवं त्रिपुरा प्रभारी छत्तरसिंह चौरड़िया द्वारा सभी को शपथ दिलाई गई। नवमनोनीत अध्यक्ष संजय चौरड़िया ने अपने वक्तव्य में सभी को धन्यवाद देते हुए आगामी कार्यकाल के लिए सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सभी को पूर्ण रूप से अणुव्रती एवं नशामुक्त बनने का प्रयास करना चाहिए। मुनि रमेश कुमार जी ने कहा कि पद तो एक व्यवस्था है, सभी को कार्यकर्ता बनने का प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर तेरापंथी सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने शुभकामनाएं प्रेषित कीं। तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, टीपीएफ, एटीएमआरएफ, मारवाड़ी युवा मंच गुवाहाटी ग्रेटर के पदाधिकारियों ने नवमनोनीत अध्यक्ष को बधाई सम्प्रेषित की। मंच संचालन कोषाध्यक्ष अजय भंसाली द्वारा किया गया।

तप समाचार

बायतु। 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखाजी के सान्निध्य में प्रज्ञा जैन सुपुत्री राकेश जैन, दिशा भंसाली सुपुत्री चंदनमल भंसाली, अमृत बालड़ सुपुत्र नेमीचंद बालड़ ने अठाई तप तथा उर्मिला बालड़ धर्मपत्नी नैतिक बालड़ ने नौ की तपस्या की।

केजीएफ। साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में साध्वी रम्यप्रभाजी ने ग्यारह, निकिता हिंगड़ एवं सोनाली हिंगड़ ने ग्यारह तथा अर्चना बोहरा ने बारह की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **अमराईवाडी ओढव।** जैन संस्कार विधि के मुख्य प्रशिक्षक एवं उपासक प्राध्यापक डालम चंद नौलखा के सुपुत्र प्रवीण नौलखा के नूतन गृह प्रवेश के अवसर पर संस्कारक पंकज डांगी और दिनेश टुकलिया द्वारा शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पादित किया गया। इस अवसर पर जैन संस्कार विधि के राष्ट्रीय प्रभारी मनीष मालू एवं अहमदाबाद तेयुप के सहमंत्री विजय छाजेड़ की भी उपस्थिति रही।

■ **साउथ कोलकाता।** स्नेह–ऋतु दुगड़ का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक महेंद्र दूगड़ एवं सह-संस्कारक रोहित दूगड़ ने सम्पन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **पर्वत पाटीया।** सरदारशहर निवासी सूरत प्रवासी विजय कन्हैयालाल बोथरा का नूतन प्रतिष्ठान महावीर यार्न प्रा. लि. का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पवन बुच्चा व रवि मालू ने निर्दिष्ट विधि विधान से सम्पन्न करवाया।

नव गठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह

कालू।

साध्वी उज्ज्वलरेखाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, कालू में तेरापंथ महिला मंडल का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर महिला मंडल की नवगठित टीम की घोषणा की गई, जिसमें संरक्षिका मुलतानी देवी नाहटा, परामर्शक सरोज गोलछा और चंद्रकला देवी दुगड़, अध्यक्ष पुष्पा देवी सांड, मंत्री नीलम बोथरा, प्रथम उपाध्यक्ष रिंकु नाहटा, द्वितीय उपाध्यक्ष कलावती बैद, कोषाध्यक्ष जागृति भादाणी, प्रथम सहमंत्री रेणु बोथरा, द्वितीय सहमंत्री संगीता सिंघी, प्रचार-प्रसार मंत्री संतोष सांड, कन्यामंडल प्रभारी प्रभा देवी सांड, संयोजिका आस्था सांड, तथा सह-संयोजिका ऋतु सांड शामिल रहीं।

साध्वी उज्ज्वलरेखा जी ने अपने वक्तव्य में नवगठित टीम को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि तेरापंथ महिला मंडल एक सुव्यवस्थित संस्था है, जो जागरूकता के साथ कार्य करती है।

एक महिला यदि संकल्प कर ले तो कुछ भी कर सकती है और किसी भी ऊंचाई तक पहुंच सकती है। उन्होंने सभी सदस्यों को उत्साहपूर्वक कार्य करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर संरक्षिका मुलतानी देवी नाहटा, नवनिर्वाचित अध्यक्ष पुष्पा देवी सांड, मंत्री नीलम बोथरा तथा निवर्तमान अध्यक्ष चंद्रकला देवी दुगड़ ने अपने विचार साझा किए। नवगठित टीम को शपथ ग्रहण संरक्षिका मुलतानी देवी नाहटा द्वारा करवाई गई। कार्यक्रम का कुशल संचालन चंद्रकला देवी दुगड़ ने किया।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर द्वारा उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। इसके पश्चात परिषद के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया।

पूर्व अध्यक्ष अरुण नाहटा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। परिषद अध्यक्ष ललित राखेचा के प्रारंभिक वक्तव्य के उपरांत मुनि कमलकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु ने लौकिक प्रवृत्तियों को नितांत सांसारिक बताया है। उन्होंने कहा कि गृहस्थावस्था में रहते हुए व्यक्ति को कुछ प्रवृत्तियाँ अपनानी पड़ती हैं जैसे चूल्हा जलाना, नल चलाना, विवाह आदि, परंतु इन्हें धर्म नहीं माना जाना चाहिए।

कर्तव्य और धर्म को एक नहीं समझना चाहिए, क्योंकि लौकिक कार्य प्रायः हिंसा प्रधान होते हैं, जबकि धर्म का आधार है अहिंसा, संयम और तप। मुनिश्री ने कहा कि किसी अज्ञानी को ज्ञानी बनाना, दुराचारी को सदाचारी बनाना और हिंसक को अहिंसक बनाना – यही सच्चा धर्म है, जिससे न केवल उसका, बल्कि उसके परिवार का भी उत्थान संभव है।

उन्होंने समझाया कि असंयमी जीव के जीने की इच्छा रखना राग, उसके मरने की इच्छा रखना द्वेष, और उसके संसार से पार होने की इच्छा रखना ही वीतराग धर्म है। इस त्रिवेणी का विस्तार से बोध कराते हुए उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु के सिद्धांत आज भी पूर्णतया प्रासंगिक और अकाट्य हैं। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रमों में एक महत्वपूर्ण पहलु यह है कि उनके साहित्य का गहराई से अध्ययन किया जाए, जिससे उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व को समझा जा सके और श्रद्धा में वृद्धि हो।

मंत्री मांगीलाल बोथरा ने बताया कि मुनिश्री की प्रेरणा से आयोजित इस कार्यशाला में तेयुप के परामर्शकगण, पदाधिकारी, युवा और किशोर साथी, तेरापंथी सभा, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, कन्या मंडल तथा श्रावक-श्राविका समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष देवेंद्र डागा ने किया।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

बीकानेर

तुलसी साधना केंद्र में भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के शुभारंभ के त्रिदिवसीय कार्यक्रम केंद्र से निर्धारित विषयों के अनुसार हर्षोल्लासपूर्वक आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या शासनश्री द्वय साध्वी मंजूप्रभा जी एवं साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी मंजूप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु के अभिष्क्रमण से लेकर उनके जीवन के संघर्षपूर्ण प्रसंगों पर विशेष प्रकाश डाला और उनकी साहसिक संयम यात्रा का रोचक विश्लेषण प्रस्तुत किया। 'शासनश्री' साध्वी कुंथुश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज गुरु पूर्णिमा है, और भारतीय संस्कृति में गुरु को सर्वोपरि माना गया है। गुरु स्वार्थी नहीं, परार्थी होते हैं; वे संयम की मशाल लेकर समाज का पथदर्शन करते हैं। आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन ही तेरापंथ की स्थापना हुई थी। तेरापंथ अहंकार और ममकार के विसर्जन का प्रतीक है। आचार्य भिक्षु का हौसला बुलंद, चरित्र महान, इरादे दृढ़ और सत्य के प्रति समर्पण पूर्ण थे। उन्होंने कहा कि त्याग धर्म है, अहिंसा धर्म है, और सभी प्राणियों के प्रति सद्भावना ही धर्म है। आपने तेरापंथ दर्शन का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में साध्वी जयंतमाला जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप से 'मेरे तो भिक्षु ही भगवान' गीत का संगान किया। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व को गृहमंत्री, रक्षा मंत्री, प्रधानमंत्री और शिक्षा मंत्री के रूपक के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी संबोधयशा जी ने 'सुख वैभव भावी पीढ़ी को' पंक्तियों के माध्यम से भावपूर्ण कविता पाठ किया। साध्वी आलोकप्रभा जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल की विजयलक्ष्मी सेठिया द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष सुरपत बोथरा, मंत्री सुरेश बैद, सुंदरलाल झाबक, जयचंदलाल बोथरा, पारस छाजेड़ सहित अनेक श्रावकों ने आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। महिला मंडल ने 'भिक्षु बगिया बड़ी निराली रे' गीत को स्वर देकर भाव वातावरण को सरस बना दिया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुलभयशा जी द्वारा किया गया।

पीतमपुरा

भिक्षु चेतना वर्ष के पावन अवसर पर पीतमपुरा सभा द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी के सान्निध्य में हर्षोल्लास के साथ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात केंद्र द्वारा निर्देशित भक्ति गीत 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' का भावपूर्ण सामूहिक संगान किया गया। इसके पश्चात सामूहिक रूप से 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का ऊर्जावान जाप करते हुए सभी भिक्षुमय वातावरण में लीन हो गए। मंगलाचरण का संगान साध्वी चिंतनप्रभाजी ने किया। साध्वी कार्तिकप्रभाजी ने भी आराध्य भिक्षु स्वामी पर हृदयस्पर्शी गीतिका से सभी को भावविभोर कर दिया। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु के जन्म, उनकी धर्मक्रांति एवं उनके असाधारण तप-त्याग की भावपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की। आपने बताया कि किस प्रकार उनके अदम्य साहस और सहनशीलता के कारण आज हम सभी को यह महान आध्यात्मिक राजमार्ग उपलब्ध है। सभा की ओर से विशेष स्क्रीन की व्यवस्था की गई, जिस पर परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के अहमदाबाद से लाइव प्रवचन का श्रवण किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों में शालीमार बाग सभा की अध्यक्षा सज्जन गिड़िया, मानसरोवर गार्डन सभा के अध्यक्ष नरेंद्र पारिख, कीर्ति नगर सभा के अध्यक्ष मनोज सुराणा, पश्चिम दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा चंदा डूंगरवाल, मध्य दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा कनक चोपड़ा आदि ने अपने आराध्य के प्रति भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन पीतमपुरा सभा मंत्री वीरेंद्र जैन ने कुशलता पूर्वक किया। सांयकाल आयोजित धम्म जागरण कार्यक्रम में श्रद्धालुओं ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से सम्पूर्ण वातावरण को भिक्षुमय बना दिया। तेरापंथ स्थापना दिवस के कार्यक्रम का शुभारंभ त्रिनगर की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभाजी ने सुमधुर गीतिकाओं का संगान किया। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभाजी ने राजस्थानी गीतिका के माध्यम से तेरापंथ की महत्ता और उसकी अध्यात्म-यात्रा का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया। 'शासनश्री' साध्वी सुव्रता जी ने अपने प्रवचन में भिक्षु दृष्टांतों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। शालीमार बाग की बहनों द्वारा प्रस्तुत गीतिका ने कार्यक्रम में भक्ति की सरिता प्रवाहित की। विशिष्ट अतिथियों में महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, कमल बैंगानी, शालीमार बाग की अध्यक्षा सज्जन गिड़िया, मानसरोवर गार्डन के अध्यक्ष नरेंद्र पारिख, कीर्ति नगर सभा के अध्यक्ष मनोज सुराणा एवं पीतमपुरा के सभा मंत्री वीरेंद्र जैन ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वीश्री की प्रेरणा से इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम के दौरान लगभग 30 से अधिक श्रद्धालुओं ने तेले की तपस्या का अनुष्ठान किया।

पाली

तेरापंथ सभा भवन में आयोजित त्रिदिवसीय धार्मिक कार्यक्रमों की श्रृंखला अत्यंत हर्षोल्लास एवं आध्यात्मिक वातावरण में प्रारंभ हुई। आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी के पावन अवसर पर आचार्य भिक्षु के त्रिशताब्दी जन्म वर्ष को 'भिक्षु चेतना वर्ष' के रूप में उल्लासपूर्वक मनाया गया, जिसकी उद्घोषणा पूज्य आचार्य प्रवर द्वारा की गई थी। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी त्रय द्वारा 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत के संगान से हुआ, जिसने वातावरण को भावविभोर कर दिया। साध्वी काव्यलताजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि कांठा क्षेत्र की पुण्यभूमि कंटालिया में माता दीपां को सिंह स्वप्न के पश्चात एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम भीखण रखा गया। कुशाग्र बुद्धि, निर्भीक व्यक्तित्व एवं तीक्ष्ण मेधा से संपन्न आचार्य भिक्षु ने अल्पायु में ही वैराग्य की ओर अग्रसर होते हुए आचार्य रघुनाथ जी से दीक्षा ग्रहण की। कालांतर में तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना हुई, जो आज विश्व क्षितिज पर अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। इस अवसर पर पाली जैन समाज के सभी वर्गों के गणमान्य जनों की गरिमामयी उपस्थिति रही। महासभा सदस्य गौतम छाजेड़ ने आगंतुकों का आत्मीय स्वागत किया। ललिता ओस्तवाल द्वारा मासखमण एवं सुरेंद्र सालेचा द्वारा अठ्ठाई की तपस्या ने कार्यक्रम को एक शुभ प्रारंभ प्रदान किया। युवक परिषद द्वारा साध्वीश्री के सान्निध्य में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के बैनर का अनावरण किया गया। महिला मंडल, अणुव्रत समिति सहित सभी संस्थाओं की सक्रिय सहभागिता रही। आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी पर साध्वीश्री ने विशाल जनसमूह को कंद-मूल, सचित्त एवं रात्रि भोजन के त्याग का संकल्प दिलवाया तथा ब्रह्मचर्य की साधना हेतु प्रेरित किया। साध्वी ज्योतियशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी एवं साध्वी राहतप्रभा जी द्वारा प्रस्तुत गीत 'जागो जागो जी, जगाने आया चातुर्मास है' ने उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन साध्वी ज्योतियशा जी ने किया तथा साध्वी वृंद द्वारा हाजरी का वाचन भी संपन्न हुआ। सभा के मंत्री प्रकाश कांकरिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। साध्वी काव्यलता जी ने अपने उद्बोधन में आचार्य भिक्षु के तपोबल, आत्मबल, ज्ञानबल एवं श्रद्धाबल की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इन्हीं शक्तियों के बल पर तेरापंथ आज सूर्य के समान चमक रहा है। 'शासन कल्पतरु' गीत की स्वर-लहरियों ने सभा को भक्तिभाव में सराबोर कर दिया।

यशवंतपुर

साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में 'ओम भिक्षु' के अखंड जप अनुष्ठान के साथ 300वां भिक्षु जन्म दिवस एवं 268वां बोधि दिवस का शुभारंभ स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में हुआ। सामूहिक रूप से 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी' गीत का संगान किया गया। साध्वी सोमयशा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु भविष्यदृष्टा, सौम्य, सहनशील व हंसमुख थे। भिक्षु स्वामी और भगवान महावीर में अनेक समानताएं हैं। आचार्य भिक्षु ने त्याग को धर्म और भोग को अधर्म बताया। साध्वी डॉ. सरलयशा जी ने भिक्षु स्वामी को क्रांति का पुरोधा बताते हुए कहा—वे अनेक कष्टों को सहने के बाद भी सत्य मार्ग पर अडिग रहे। साध्वी ऋषिप्रभा जी ने भिक्षु जीवन-दर्शन की संक्षिप्त व्याख्या करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु को सभी जानते और मानते हैं, परंतु आचरण में लाना शेष है। जब भिक्षु आचरण में आएंगे, तब हम लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। दिव्या दक व भाविका सिसोदिया ने भिक्षु अष्टकम का संगान किया। गगन बरडिया ने गीत की प्रस्तुति दी। निवर्तमान महिला मंडल अध्यक्ष मीना दक एवं सभाध्यक्ष सुरेश बरडिया ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार एवं संचालन मंत्री अनिल दक ने किया। रात्रि में साध्वीश्री के सान्निध्य हुआ। अध्यक्ष सुरेश बरडिया ने भजन मंडली प्रेक्षा संगीत सुधा के सदस्यों का स्वागत कर परिचय दिया। हितेश दक, हर्षिल बरडिया ने गीत प्रस्तुत किए। प्रेक्षा संगीत सुधा के सदस्यों ने स्वामीजी के प्रसिद्ध एवं कई स्वरचित गीतों का संगान किया। आभार सभा मंत्री अनिल दक ने किया। वर्षावास प्रारंभ के अवसर पर साध्वी सोमयशा जी ने कहा कि चातुर्मास काल वासना से उपासना, भोग से त्याग तथा इंद्रिय संयम की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। यह एक आध्यात्मिक अनुष्ठान है। जो सुलभबोधि होता है, वह कुछ विशेष कर सकता है। सावन-भादवा में पाचन तंत्र कमजोर होता है—यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है। संकल्प शक्ति मजबूत हो तो तपस्या संभव है। तिथियों पर त्याग-प्रत्याख्यान करने का विशेष प्रयोजन स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अपेक्षित है। साध्वी डॉ. सरलयशा जी ने कहा कि आध्यात्मिक विकास का सीजन शुरू हो गया है। भारतीय परंपरा में यज्ञ का महत्व है, और हम आध्यात्मिक जप से यज्ञ कर रहे हैं। तपस्या पर प्रेरणादायी गीत का संगान साध्वी डॉ. सरलयशा जी एवं साध्वी ऋषिप्रभा जी ने किया। तत्पश्चात साध्वी वृंद ने हाजरी का वाचन किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन प्रवक्ता उपासक महेन्द्र दक ने किया। आभार एवं सूचना सभा मंत्री अनिल दक ने दी। तेरापंथ स्थापना दिवस समारोह में साध्वी सोमयशा जी ने बताया कि गुरुपूर्णिमा के दिन तेरापंथ का सौभाग्य जगा, जिससे हमें भीखणजी जैसे गुरु प्राप्त हुए।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेरापंथ का जो विकास दिखाई देता है, वह तप और त्याग का परिणाम है। साध्वी डॉ. सरलयशा जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति का उद्भव ऋषि परंपरा से हुआ है। उसी प्रकार तेरापंथ धर्मसंघ, आचार्य भिक्षु के हिमालय संकल्प की अनुश्रुति है।

मुख्य वक्ता प्रवक्ता उपासक महेन्द्र दक ने अपने वक्तव्य में तेरापंथ के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। महिला मंडल अध्यक्ष रेखा पितलिया, उपाध्यक्ष नीतू बाबेल, निवर्तमान अध्यक्ष मीना दक ने भिक्षु अष्टकम से मंगल शुरुआत की। पदाधिकारी व कार्यसमिति बहनों द्वारा आषाढ़ी पूनम पर सुंदर गीत का संगान हुआ। कन्या मंडल एवं महिला मंडल की युवतियों द्वारा 'केलवा की ओरी' पर सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई। संचालन साध्वी ऋषिप्रभा जी ने किया।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर विशेष

ॐ भिक्खू स्याम

● साध्वी आस्थाप्रभा ●

भिक्षु-भिक्षु भजले रे प्राणी, भिक्षु की वाणी जन-जन कल्याणी।
ॐ भिक्खू स्याम, भिक्खू स्याम, मेरे स्याम।
ॐ मोरे श्याम, मोरे श्याम, भिक्षु स्वाम।।

1. ॐ भिक्षु का नाम सदा सुखकारी, जो जपता है बन अविकारी।।
2. बल्लू शा के लाल दुलारे, दीपानंदन कुल उजियारे।।
3. धर्म क्रान्ति का बिगुल बजाया, सत्य शोधकर पथ दिखलाया।।
4. विघ्न हरण है मंगलकारी, सब दुख भंजन भवभयहारी।।
5. हर धड़कन में बसे हो स्वामी, घट-घट के हो अन्तर्यामी।।
6. श्वास-श्वास में भिक्षु बोले, रोम-रोम में अमीरस घोले।।
7. श्रद्धावनत है आस्था धाम, सरजाए मनवांछित काम।।
8. भिक्षु त्रिजन्म शताब्दी आई, जन-जन मन में पुलकन छाई।।

लय - राम सिया सिया राम जय

दुनियां कुछ भी कहती उनको

● हनुमान जैन 'हनु', बेंगवानी, विशाखापट्टनम ●

तेरापंथ के शलाका पुरुष को, मेरा शत-शत वन्दन है।
उनके इस महान अवदान पर, हम करते उनका अभिनंदन है।।

उस महामना को क्या कहूं, उसके कितने-कितने हम पर उपकार हैं।
इस भवसागर में डूबते भक्तों की वो पतवार हैं।
दुनियां कुछ भी कहती उनको, सच कहता हूं —
इस युग के 'हनु', वो पच्चीसवें अवतार हैं।।

इस धरा को दिए हैं उसने, अद्भुत नए विचार हैं।
तेरापंथ की नींव के, वो सबसे बड़े आधार हैं।
संकट मोचन, सब दुःख भंजन, भिक्षु नाम यह तारण हार है।
दुनियां कुछ भी कहती उनको, सच कहता हूं — इस युग के...

तेरापंथ के मोर मुकुट हैं, और गले के हार हैं।
रामायण, गीता, वेद और आगम, सभी ग्रंथों के वो सार हैं।
जिसने भिक्षु नाम जपा हो, बेड़ा उसका पार है।।
दुनियां कुछ भी कहती उनको, सच कहता हूं — इस युग के...

भारत की यह पावन धरती, करती आज पुकार है।
भक्त जनों को पड़ी है बाबा, फिर आज तेरी दरकार है।
जहां भी देखो, गूंज रही है बस तेरी जय-जयकार है।।
दुनियां कुछ भी कहती उनको, सच कहता हूं — इस युग के...

भिक्षु-भिक्षु गाएं हम

● साध्वी निर्मलयशा ●

भिक्षु-भिक्षु जन-जन मुख पर, गूंज रहा है नारा।
श्री भिक्षु त्रिजन्मशताब्दी, लाया नाया उजारा।
भिक्षु-भिक्षु गाएं हम।
भिक्षु को बुलाएं हम।।

1. मर्यादाओं की नीवों पर मंजुल महल बनाया,
त्यागी बालिदानी संतों ने, तप से इसे सजाया।
मर्यादा ही ढाल हमारी, मर्यादा सबल सहारा।।

2. गण निष्ठा गुरू निष्ठा, दिन-दिन होती जाये गहरी,
आज्ञा निष्ठा अनुपालन में, बनें सजग हम प्रहरी।
श्रद्धा भक्ति से भावित हो, तन मन प्राण हमारा।।

3. सेवा की आराधना से संघ चमन खिलता है,
आगम वाणी मुखरित होती, तीर्थंकर पद मिलता है।
सेवा परम धर्म कहलाये, लाखों को पार उतारा।।

4. श्वास समर्पण प्राण समर्पण, तेरापंथ निशानी,
गुरु दृष्टि सुख सृष्टि बनती, हम गण के सेनानी।
गण अपना हम गण के हैं, गुरु इंगित लगता प्यारा।।

5. एक सुगुरू के अनुशासन में, संघ प्रगति करता है,
निज पर शासन फिर अनुशासन, यही मंत्र फलता है।
भिक्षु चेतना वर्ष मनाये, महाश्रमण ध्रुवतारा।।

लय - माईन माईन

बाबा भिक्षु के चरणों में

● ऋषभ दुधोड़िया, साउथ हावड़ा ●

बाबा भिक्षु के चरणों में, वंदन हमारा है।
जग में ना और कोई, एक तेरा सहारा है।।

तीन सौ वर्ष पहले, धरती पर जन्म लिया,
बल्लू दीपां घर आंगन, खुशियों से भर दिया।
बाबा भक्ति करूं तेरी, हर मन को जगाना है।।

संसार के सागर में, जीवन की नैया है,
बिन तेरे प्रभु मेरा, अब कौन खेवैया है।
मझधार में किश्ती है, बड़ी दूर किनारा है।।

पावन नाम तेरा, तेरी महिमा भारी है,
तेरापंथ धर्मसंघ का, बाबा तारणहारी है।
आए हैं शरण तेरी, सदा ध्यान तुम्हारा है।।

लय - एक प्यार का नगमा है

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

साहस के सौदागर भिक्षु

● साध्वी भावितयशा ●

साहस के सौदागर भिक्षु, तेरी जय विजय हो -3
भीखण, भिक्खु स्वाम, मेरी आस्था के धाम,
जग रखवारेऽऽऽ रखवारेऽऽऽ
साधना के शिखर पुरूष की पग-पग जय जयकार है,
बल्लू शाह के दुलारे दीपा नयन सितारे
गण के महाप्राण हो महाप्राण।।

1. कंटालिय में जन्म तुम्हारा, बोधि राजनगर पाये,
ओरी अंधेरी के तम से, तेरापंथ उजाला फैलाये,
तप भूमि सिरियारी कण-कण यश गाथायें गाये।
महउपकारी भिक्षु गण वरदायी ।।

2. आत्मशुद्धि की निखरी कहानी, झंझावातों को चीरकर,
आध्यात्मिक आरोहण यात्रा, समता रस का पान कर,
मोह ममता की डोर को काटा, अहंकार नहीं साथ हो।
मर्यादा से बांधी गण की नींवें गहराई ।।

3. महाश्रामण भगवान हमारे भिक्षु और महावीर हैं,
भक्ति से भावित मुख्यमुनिश्री, घट में गुरु तस्वीर है,
साध्वीप्रमुखाश्री साध्वी वर्या, घट में गुरु तस्वीर है,
भिक्षु चेतना वर्ष सुनहरा, आशीर्वार बक्साये।
ज्ञान दर्शन तप चरण में अव्वल हम बन जाये ।।

भीखण भिक्खु स्वाम,
जय ज्योतिचरण ज्योतिचरण।

लय - कौन दिशा में

भिक्षु चेतना वर्ष में क्या-क्या पाना है?

● मोहनलाल भंसाली 'कलाकार', गंगाशहर ●

हमें भिक्षु चेतना वर्ष में जिनवाणी का रसपान करना है।
हमें शोभजी श्रावक जैसा अद्वितीय श्रावक बनना है।।

हमें दीपा नन्दन का स्मरण करना है,
शम, सम और श्रम के मंत्र का अनुसरण करना है।
हमें भिक्षु जीवन चरित्र का स्वाध्याय करना है,
सम्यक ज्ञान, दर्शन, चारित्र में निष्ठावान बनना है।।
हमें भिक्षु चेतना...

हमें तार्किक और दार्शनिक प्रचेता को पढ़ना है,
श्रद्धानत बनकर साधना के शिखर पर चढ़ते जाना है।
हमें लौकिक और लौकोतर धर्म के मर्म को समझना है,
शास्त्रों के आलोक में शाश्वत धर्म को आत्मसात करना है।।
हमें भिक्षु चेतना...

हमें मर्यादा के सूत्रधार को समझना है,
संयमित जीवन-शैली और अनुशासन को अपनाना है।
हमें आर्य भिक्षु के सिद्धांतों को जानना है,
नैया खेवनहार मंत्रदाता के आदर्श पथ पर चलना है।।
हमें भिक्षु चेतना...

हमें सिंहवृत्ति के आध्यात्मिक गुरु को जानना है,
गणनायक का आह्वान, चहुं ओर भिक्षुमय माहौल बनाना है।
हमें ज्ञानी वैभव, तत्त्ववेत्ता को समझना है,
तेरापंथ ! मेरापंथ बनें, युग चिंतन को साकार करना है।।
हमें भिक्षु चेतना...

संबोधि

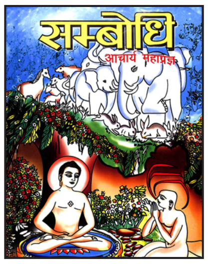

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

११. अमनोज्ञसंप्रयोगे, नार्त्तं ध्यायन् कदाचन।
मनोज्ञविप्रयोगे च, मनसः स्वास्थ्यमाप्स्यसि।।

अमनोज्ञ विषयों का संयोग होने और मनोज्ञ विषयों का वियोग होने पर तू आर्त्तध्यान मत कर, अपने मानस को चिंता से पीड़ित मन बना, इस प्रकार तू मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त होगा।

१२. रोगस्य प्रतिकाराय, नार्तं ध्यायंस्तथा त्यजन्।
फलाशां भोगसंकल्पान्, मनसः स्वास्थ्यमाप्स्यसि।।

रोग के उत्पन्न होने पर चिकित्सा के लिए आर्त्तध्यान मत कर तथा भौतिक फल की आशा और भोग-विषयक संकल्पों को छोड़, इस प्रकार तू मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त होगा।

१३. शोकं भयं घृणां द्वेषं, विलापं क्रन्दनं तथा।
त्यजन्नज्ञानजान् दोषान्, मनसः स्वास्थ्यमाप्स्यसि।।

शोक, भय, घृणा, द्वेष, विलाप, क्रंदन और अज्ञान से उत्पन्न होने वाले दोषों को तू छोड़, इस प्रकार तू मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त होगा।

१४. लब्धानां नाम भोगानां, रक्षणायाचरेज्जनः।
हिंसां मृषा तथाऽदत्तं, तेन रौद्रः स जायते॥

मनुष्य प्राप्त भोगों की रक्षा के लिए हिंसा, असत्य और चोरी का आचरण करता है, और उससे वह रौद्र बनता है।

१५. तथाविधस्य जीवस्य, चित्तस्वास्थ्यं पलायते।
संरक्षणमनादृत्य, मनसः स्वास्थ्यमाप्स्यसि।।

जो मनुष्य रौद्र होता है उसका मानसिक स्वास्थ्य नष्ट होता है। तू भोगों की रक्षा का प्रयत्न मत कर, इस प्रकार तू मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त होगा।

१६. रागद्वेषौ लयं यातौ, यावन्तौ यस्य देहिनः।
सुखं मानसिकं तस्य, तावदेव प्रजायते।।

जिस मनुष्य के राग-द्वेष का जितनी मात्रा में विलय होता है, उसे उतनी ही मात्रा में मानसिक सुख प्राप्त होता है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री तुलछां जी (लाडनूं) दीक्षा क्रमांक 132

साध्वीश्री तपस्विनी थी। तप का विवरण प्राप्त नहीं है। सिर्फ अन्तिम में संलेखना तप किया वह प्राप्त होता है– पहले उपवास, फिर बेला, चोला, उपवास, छह, तेला, पंचोला, तेला, सात, उपवास, सोलह, ग्यारह, बारह, पन्द्रह, तेला, ग्यारह, दस और आठ दिन का तप किया। आगे 20 दिन का चालू किया जिसमें 15वें दिन 8 प्रहर सागारी अनशन किया। पश्चात 3 मुहूर्त का चौविहार संथारा आया।

– साभारः शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

नई स्थापनाएं : नई परम्पराएं

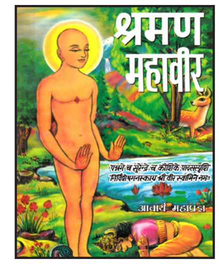

'जीवन-यात्रा का निर्वाह वेश-धारण का प्रयोजन है। जनता को उसके मुनि होने की प्रतीति हो, यह भी उसका प्रयोजन है। वेश केवल प्रयोजन की निष्पत्ति है, मुक्ति का साधन नहीं है। उसके साधन हैं- ज्ञान, दर्शन और चारित्र । इस विषय में भगवान् पार्श्व और भगवान् महावीर का पूर्ण मतैक्य है।'

'भगवान् महावीर ने देखा - वर्तमान के मुनि वेश में कुछ आसक्त होते जा रहे हैं। मुनि-जीवन आसक्ति को क्षीण करने के लिए है, फिर उसका वेश आसक्ति को बढ़ाने वाला क्यों होना चाहिए? इस चिंतन के आधार पर भगवान् ने अवस्त्र रहने का विधान किया और कोई अवस्त्र न रह सके उसके लिए अल्पमूल्य वाले अल्पवस्त्र रखने का विधान किया है। यह द्विधा का प्रयत्न नहीं है, यह मुख्य धारा से पृथक्, चलने का प्रयत्न नहीं है, किन्तु उसे इस दिशा की ओर मोड़ने का प्रयत्न है।'

केशी के शिष्यों का चित्त समाहित हो गया। उनके मन में एक नई स्फुरणा का उदय हुआ। केशी स्वयं बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने शिष्यों की भावना को पढ़ा और महावीर के तीर्थ में सम्मिलित होने का प्रस्ताव रख दिया। यह गौतम की बहुत बड़ी सफलता थी। महावीर के शासन ने एक नया मोड़ लिया। एक प्राचीन तथा प्रभावी स्रोत के मिलन से उसकी धारा विस्तीर्ण हो गई।

भगवान् पार्श्व के शिष्यों ने महावीर और उनके तीर्थ को सहज ही मान्यता नहीं दी। वे लम्बी-लम्बी चर्चाओं के बाद उनके तीर्थ में सम्मिलित हुए और कुछ साधु अन्त तक भी उसमें सम्मिलित नहीं हुए।

गौतम ने केशी और उनकी शिष्य-संपदा को पंच-महाव्रत की परम्परा में दीक्षित किया। वह एक अद्भुत दृश्य था। उसे देखने के लिए हजारों लोग उपस्थित थे। अनेक सम्प्रदायों के श्रमण भी बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। वह कोई असाधारण घटना नहीं थी। वह था अतीत और वर्तमान का सामंजस्य। वह था महान् श्रमण-नेताओं की दो धाराओं का एकीकरण।

भगवान् ने रात्रि-भोजन न करने को एक व्रत का रूप दिया। गमन, भाषा, भोजन, उपकरणों का लेना-रखना और उत्सर्ग-इन विषयों में होने वाले प्रमाद और असावधानी का निवारण करने के लिए भगवान् ने पांच समितियों की व्यवस्था की। जैसे-–

१. ईर्या	–	गतिशुद्धि का विवेक ।
२. भाषा	–	भाषाशुद्धि का विवेक ।
३. एषणा	–	भोजन का विवेक ।
४. आदान	–	निक्षेप-उपकरण लेने-रखने का विवेक ।
५. उत्सर्ग	–	मल-मूत्र के विसर्जन का विवेक ।

इन समितियों का विधान कर भगवान् ने साधु-संघ के सामने अहिंसा का व्यापक रूप उपस्थित कर दिया, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अहिंसा की व्यावहारिकता, उपयोगिता और सार्थकता का दृष्टिकोण प्रस्तुत कर दिया। उनका साधु-संघ अहिंसा की साधना में अत्यंत जागरूक हो गया।

भगवान् जीवन की छोटी-छोटी प्रवृत्तियों पर बड़ी गहराई से ध्यान देते थे। वे किसी को दीक्षित करते ही उसका ध्यान इन छोटी-छोटी प्रवृत्तियों की ओर आकृष्ट करते।

मेघकुमार सम्राट् श्रेणिक का पुत्र था। वह भगवान् के पास दीक्षित हुआ । मेघकुमार ने प्रार्थना की- भन्ते! मैं संयम-जीवन की यात्रा के लिए आपसे शिक्षा चाहता हूं।' उस समय भगवान् ने चलने, बैठने, खड़े रहने, खाने और बोलने में अहिंसा के आचरण की शिक्षा दी। जीवन की महानता का निर्माण छोटी-छोटी प्रवृत्तियों की क्षमता पर होता है- यह सत्य उनके समिति-विधान में अभिव्यक्त हो रहा है।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

ठाणं

प्रस्तुत सूत्र में भगवान महावीर के समकालीन और उत्तरकालीन दोनों प्रकार के प्रसंग और तथ्य संकलित हैं। उपलब्ध आगम सुधर्मा स्वामी की वाचना के माने गए हैं। सुधर्मा स्वामी भगवान महावीर के अनन्तर शिष्य होने के कारण उनके समकालीन हैं, इसलिए प्रस्तुत सूत्र का रचनाकाल इस्वी पूर्व छठी शताब्दी माना जाता है। आगम-संकलन के समय अनेक अंश जोड़े गए हैं। उन्हें व्यवस्थित रूप दिया गया है, इसलिए संकलन-काल की दृष्टि से इसका समय ईसा की चौथी शताब्दी है, ऐसा माना गया है।

समवाओ के ९१वें प्रकीर्णक समवाय में 'ठाणं' का परिचय इस प्रकार मिलता है- 'स्थान में स्वसमय की स्थापना, परसमय की स्थापना तथा स्वसमय परसमय दोनों की स्थापना की गई है। जीवों की स्थापना, अजीवों की स्थापना तथा जीव-अजीव-दोनों की स्थापना की गई है। लोक की स्थापना, अलोक को स्थापना तथा लोक-अलोक दोनों को स्थापना की गई है। इसमें पदार्थों के द्रव्य, गुण, क्षेत्र, काल और पर्यव की स्थापना की गई है। इसमें पर्वत, सलिल (महानदी), समुद्र, सूर्य, भवन, विमान, आकर, नदी, निधि, पुरुषों के प्रकार, स्वर, गोत्र, ज्योतिश्चक्र का संचलन-इन सबका प्रतिपादन किया गया है। इसमें एकविध वक्तव्यता (पहले स्थान में) द्विविध वक्तव्यता (दूसरे स्थान में) यावत् दशविध वक्तव्यता (दसवें स्थान में) है। इसमें जीव, पुद्गल और लोकस्थायी (धर्म, अधर्म आदि द्रव्यों) की प्ररूपणा की गई है। 'स्थान' की वाचनाएं परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियां संख्येय हैं, वेढ़ा संख्येय, हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियां संख्येय हैं और संग्रहणियां संख्येय हैं। यह अंग की दृष्टि से तीसरा अंग है। इसके एक श्रुत स्कन्ध, दस अध्ययन, इक्कीस उद्देशन-काल (दूसरे, तीसरे और चौथे) स्थान के चार-चार उद्देशक, पांचवें स्थान के तीन उद्देशक और शेष छह स्थानों के एक-एक उद्देशक हैं। इस प्रकार सारे 8 + 8 + 8 + 3 + xi = इक्कीस उद्देशन- काल हैं। इक्कीस समुद्देशन काल, पदप्रमाण से बहत्तर हजार पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्यव हैं। इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिनप्रज्ञप्त भावों का आख्यान, प्रज्ञापन, प्ररूपण, दर्शन, निदर्शन और उपदर्शन किया गया है।

ठाणं का प्रारम्भ

प्रस्तुत आगम का प्रारम्भ 'सुयं मे आउसं! तेणं भगवता एवमक्खायं'।

(आयुष्मन्! मैंने सुना, उन भगवान ने ऐसा कहा) वाक्य से होता है। प्रथम अध्याय में एक-एक संख्यावाली वस्तुओं का वर्णन है, जैसे- एगे आया, एगे दंडे (एक आत्मा, एक दण्ड) आदि।

अठारह पाप, चौबीस दण्डक, अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल आदि का संक्षिप्त उल्लेख इस अध्याय में मिलता है।

प्रथम अध्याय में अद्वैत (एक) का उल्लेख है। दूसरे अध्याय में दो द्वैत का उल्लेख है। इसमें दो-दो की संख्या वाली वस्तुओं का उल्लेख है, जैसे जीव-अजीव, पुण्य-पाप, बन्ध-मोक्ष आदि। इसमें क्रियाओं का विस्तृत वर्णन है। मोक्ष-साधन, प्रत्याख्यान, आरम्भ-परिग्रह, गति-आगति आदि का भी वर्णन इसमें उपलब्ध है।

तीसरे अध्याय में तीन-तीन की संख्यावाली वस्तुओं का वर्णन है, जैसे तीन योग, तीन प्रयोग, तीन करण आदि। इसमें अल्प, दीर्घ आयुष्य-बन्ध के कारण, ताराओं के चलित होने के कारण, देवताओं का मनुष्य-लोक में आगमन, नरकावासों में वेदना, वस्त्रधारण के कारण, मन के प्रकार, देवों की ऋद्धि आदि का वर्णन है।

चौथे अध्याय में चार-चार की संख्यावाली स्थितियों का वर्णन है, जैसे-पुरुष के चार प्रकार, भाषा के चार प्रकार, चार धर्मद्वार आदि! इसमें ध्यान, क्रोध आदि कषाय, अस्तिकाय, विकथा, बन्ध, द्वीप, समुद्र, देवता का मनुष्य लोक में आगमन, आचार्य के प्रकार, संज्ञा आदि का वर्णन है।

पांचवें अध्याय में पांच-पांच की संख्यावाली स्थितियों का वर्णन है, जैसे पांच महाव्रत, पांच स्थावर काय, पांच शरीर आदि। इसमें स्वाध्याय, ज्योतिष्क, महानिर्जरा, महापर्यवसान आदि का वर्णन है।

छठे अध्याय में छह-छह की संख्यावाली स्थितियों का वर्णन है, जैसे-छह जीवनिकाय, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी के छह-छह प्रकार आदि। इसमें प्रमाद, लेश्या, ज्ञान, प्रतिक्रमण, विशेष स्थितियों में साधु को साध्वी के स्पर्श (पकड़ना, सहारा देना) की अनुज्ञा आदि का वर्णन है।

(क्रमशः)

अगस्त 2025 सप्ताह के विशेष दिन

7 अगस्त
शुक्ला त्रयोदशी

8 अगस्त
पक्खी

9 अगस्त
भगवान मुनिसुव्रत च्यवन कल्याणक एवं रक्षाबंधन

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

पिछले अंक से जारी...

मुनिश्री वृद्धिचंदजी (बागोर) दीक्षा क्रमांक 382

पहली परिपाटी के पारणे में साधक सर्व विगय ले सकता है।
दूसरी परिपाटी के पारणे में साधक विगय नहीं लेता।
तीसरी परिपाटी के पारणे में साधक लेप लगने वाली वस्तु का वर्जन करता है।
चौथी परिपाटी में साधक पारणे में आयंबिल करता है। इस प्रकार चार आवृत्तियों में तप पूर्ण होता है, जिसमें 5 वर्ष 2 माह 28 दिन लगते है। इस तप की आराधना महासती काली ने की थी।
भगवान महावीर के समय उक्त तप बहुत बार हुआ पर उस के बाद अढ़ाई हजार वर्षों में कहीं सुनने और देखने में नहीं आया। मुनिश्री ने यह तप करके जैन जगत् के इतिहास में एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया।
आचार्य तुलसी के युग में होने वाले तपोविषयक अनेक कीर्तिमानों में यह भी एक कीर्तिमान था। मुनिश्री ने उपवास से 16 दिन का क्रम बद्ध तप किया। उनके तप की समग्र तालिका इस प्रकार है– उपवास/3198, 2/662, 3/360, 4/53, 5/34, 6/16, 7/12, 8/9, 9/5, 10/2, 11/2, 12/2, 13/2, 14/2, 15/2, 16/2।
तप के कुल दिन 6463, जिनके 17 वर्ष 11 महिने 13 दिन होते है। लगभग 31 साल के संयमकाल में इतने वर्षों का तप एक आदर्श का सूचक है।
मुनिश्री के तप की कुछ विशेषताएं–
(1) उनका सभी तप पानी के आगार से था।
(2) इतनी तपस्या में भी वे किसी भी क्षेत्र में कल्प से अधिक नहीं रहे।
(3) तपस्या के समय भी वे अपना तथा संघीय बोझ लेकर चलते थे।
(4) तप के पारणे में प्रायः आधा सेर से ज्यादा दूध नहीं लेते। लाल मिर्च तथा कच्चे पापड़ कुछ अधिक मात्रा में लेते थे।

– साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

महामना आचार्यश्री भिक्षु

तेरापथ गणिराज की, जन्म त्रि सदी आगाज,
निज भावों से अर्चना, करें प्रभु की आज।
भिक्षु को जानें सभी, पहचानें-मानें,
रचना से अर्पण करें, अंतर्मन आवाज।।

भिक्षु चेतना वर्ष पर आचार्य श्री भिक्षु के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का अनुपम अवसर

- आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के इस ऐतिहासिक अवसर पर आपको आमंत्रण है – अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से तेरापंथ टाइम्स के विशेष अंकों का हिस्सा बनने का।
- आप अपनी मौलिक रचना हमें प्रेषित कर सकते हैं, जो लेख, गीत, कविता या अन्य किसी साहित्यिक विधा में हो सकती है।

रचना हेतु नियम

1. प्रत्येक रचनाकार से केवल एक रचना ही स्वीकार की जाएगी।
2. रचना का आधार आचार्य भिक्षु एवं उनका दर्शन हो।
3. लेख की अधिकतम सीमा लगभग 750 शब्दों तक सीमित हो।
4. गीत/कविता अधिकतम 5 पद्य अथवा 15 पंक्तियों तक ही सीमित रहें।
5. प्राप्त रचनाओं का प्रकाशन भिक्षु चेतना वर्ष के दौरान कभी भी किया जा सकता है।
6. रचना के प्रकाशन का अंतिम निर्णय तेरापंथ टाइम्स संपादक मंडल का होगा।
7. रचना भेजने की अंतिम दिनांक- 31 अगस्त, 2025

रचना भेजने का माध्यम

ईमेल करें : abtyptt@gmail.com या
वॉट्सएप करें : +91 89059 95002

चार दीक्षार्थी भाई-बहनों का मंगल भावना समारोह हुआ आयोजित

उधना।

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी मधुबाला जी के सान्निध्य में चार दीक्षार्थी भाई-बहनों — मुमुक्षु अंजलि सिंघवी (कोयंबटूर), मुमुक्षु कल्प मेहता (वाव-सूरत), मुमुक्षु विशाल परीख (वाव-सूरत) एवं मुमुक्षु मनोज संकलेचा (टापरा-सूरत) — का भव्य मंगल भावना समारोह आयोजित हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी मधुबाला जी ने कहा कि मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ है। यही एकमात्र जीवन है जिसमें व्यक्ति अपने पूर्व संचित कर्मों से मुक्त होकर मोक्ष पद को प्राप्त कर सकता है। यदि मोक्ष प्राप्ति का कोई स्वर्णिम सोपान है, तो वह दीक्षा ही है। दीक्षा का अंगीकार करने वाला संयम के मार्ग पर अग्रसर होता है। संयम चिंतामणि रत्न के समान है, जो जन्म-मरण की परंपरा को सदा के लिए समाप्त कर सकता है।

उन्होंने कहा कि आज हमारे समक्ष चार-चार मुमुक्षु उपस्थित हैं, जो संसार सागर को पार करने के लिए उत्सुक हैं। दीक्षा की परिभाषा बताते हुए उन्होंने कहा कि दीक्षा वह प्रक्रिया है जो राग से विराग की ओर, असंयम से संयम की ओर, और बंधन से मुक्ति की ओर ले जाती है। उन्होंने सभी दीक्षार्थियों के दृढ़ संकल्प की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु कामना की। साध्वी विज्ञानश्रीजी, साध्वी सौभाग्यश्रीजी, साध्वी मंजुलयशाजी एवं साध्वी मेधावीप्रभाजी ने भी दीक्षार्थियों के संयममय जीवन के लिए शुभकामनाएं दीं।

मुमुक्षु अंजलि सिंघवी, जो साध्वी मंजुलयशा जी की संसारपक्षीय छोटी बहन हैं, ने कहा कि उन्हें सांसारिक जीवन प्रिय था और नए-नए वस्त्र पहनने का अत्यधिक शौक था। उन्हें कभी कल्पना भी नहीं थी कि उनके भीतर वैराग्य भाव जागृत होगा। लेकिन जब पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी कोयंबटूर में उनके घर पधारे, तो उनके आशीर्वाद और 'शासन माता' साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी, साध्वी मधुबाला जी तथा अपनी बड़ी बहन साध्वी मंजुलयशा जी की प्रेरणा से उनके अंतर्मन में वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ। उन्होंने सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

मुमुक्षु कल्प मेहता ने कहा कि उनका जन्म वर्ष 2003 में उस समय हुआ जब पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का चातुर्मास सूरत में था। उसी समय युवाचार्य महाश्रमण जी ने अस्पताल पधारकर उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया था। उन्होंने कहा कि उन्हीं के आशीर्वाद से वैराग्य भाव का अंकुर उनके भीतर फूटा और साध्वी मधुबाला जी ने उनके वैराग्य को पुष्ट किया।

मुमुक्षु विशाल परीख ने कहा कि सूरत उनकी कर्मभूमि है। वर्ष 2015 में उन्होंने ज्ञानशाला प्रकोष्ठ से जुड़ाव प्रारंभ किया। 'शासनश्री' साध्वी मधुबाला जी और साध्वी सौभाग्यश्रीजी की प्रेरणा से वे उपासक बने और आज उनके आशीर्वाद से उन्हें दीक्षा मार्ग पर अग्रसर होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मुमुक्षु मनोज संकलेचा, जो मुनि दिनेश कुमार जी के संसारपक्षीय भतीजे हैं, ने कहा कि उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि वे दीक्षा ले पाएंगे। जब कोई दीक्षा की बात करता था, तो वे उससे दूर भागते थे। लेकिन मुनि दिनेश कुमार जी और साध्वी मधुबाला जी की प्रेरणा ने उनके जीवन की दिशा बदल दी।

संयोजकीय वक्तव्य में साध्वी मंजुलयशा जी ने श्रावक-श्राविकाओं से कहा कि आप स्वयं दीक्षा लें या न लें, लेकिन यदि भविष्य में आपकी संतान दीक्षा लेने के लिए तैयार हो, तो उसमें बाधक नहीं, बल्कि साधक बनें।

तेरापंथ सभा उधना के अध्यक्ष निर्मल चपलोत, पूर्व अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, सूरत सभा मंत्री महेन्द्र गांधी मेहता आदि ने दीक्षार्थियों के प्रति मंगल भावना व्यक्त की। समाज के अग्रणियों द्वारा सभी मुमुक्षुओं को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

तेरापंथ महिला मंडल, सभा, युवक परिषद, अणुव्रत समिति एवं ज्ञानशाला द्वारा मधुर गीतों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा उधना के मंत्री मुकेश बाबेल ने किया। कार्यक्रम में स्थानकवासी जैन समाज के अग्रणियों की उपस्थिति भी रही।

आत्मजागरण और सिद्धि का द्वार है चातुर्मास

कोलकाता।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा-3 का चातुर्मासिक प्रवेश लेकटाउन स्थित भिक्षु विहार (डिविनिटी पेवेलियन) में श्रद्धा और उल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्रद्धालु श्रावक समाज द्वारा एक विशाल संयम रैली का आयोजन किया गया। चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के उपरांत आयोजित स्वागत समारोह में पश्चिम बंगाल सरकार के दमकल मंत्री एवं क्षेत्रीय विधायक सुजीत बोस ने सहभागिता की और मुनिश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। अपने संबोधन में मुनि जिनेश कुमारजी ने कहा कि चातुर्मास आत्मजागरण और साधना-सिद्धि का द्वार है। यह भोग से योग की ओर अग्रसर होने तथा आध्यात्मिक वैभव को प्राप्त करने का अवसर है। इस अवधि में धर्म का पोषण और अधर्म का शोषण होता है। यह आत्मनिरीक्षण और शक्ति-संवर्धन का सुपथ है। उन्होंने आगे कहा कि गुरुकृपा से प्राप्त यह चातुर्मासिक ठहराव श्रावक समाज के लिए एक अलभ्य सौभाग्य है।

मुनिश्री ने चातुर्मास की सफलता के पाँच सूत्र बताए—उत्साह, उदारता, आत्मीयता, आराधना और अनुमोदना। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को इस अवधि में अधिकाधिक ज्ञान, दर्शन और साधना की आराधना करने का आह्वान किया।

मुनि परमानंदजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि चातुर्मास जागरण का काल है। इस समय प्रेम, प्रवचन और प्रत्याख्यान—इन तीन 'प्र' पर विशेष ध्यान देना चाहिए। मुनि कुणाल कुमारजी ने एक गीत का संगान किया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री के नमस्कार महामंत्रोच्चार और जप अनुष्ठान से हुई। स्वागत गीत का संगान पूर्वांचल महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत किया गया।

(शेष पेज 12 पर)

जैन विश्व भारती में दो दिवसीय साहित्यिक उत्सव एवं विराट कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन

सुप्रसिद्ध कवियों ने निकटता से किया तेरापंथ साहित्य संग्रह का अवलोकन

लाडनूं।

आध्यात्मिक एवं शैक्षणिक परिसर जैन विश्व भारती में द्विदिवसीय 'काव्य की सुर सरिता' राष्ट्रीय साहित्यिक संगोष्ठी एवं विराट कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें देश के 15 विभिन्न राज्यों से कवि, शिक्षक, भाषाविद, साहित्यकार एवं विद्वतजन सहभागी बने। जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित इस आयोजन को चंदनतारा दुगड़ फाउंडेशन की ओर से राजेश दुगड़ ने प्रायोजित किया। मुनि जयकुमार जी के दिशा-निर्देशन में सम्पन्न हुए इस विराट आयोजन के सूत्रधार अंतरराष्ट्रीय कवि एवं प्रखर वक्ता राजेश चेतन रहे, मार्गदर्शक के रूप में संस्था के परिसर संयोजक धर्मचंद लुंकड़ तथा आयोजन संयोजक इन्द्र बैंगानी की भूमिका रही।

लगभग 125 एकड़ में फैला आत्मा की प्रत्येक कामना को शांत करने की सामर्थ्य रखने वाला जैन विश्व भारती का सुरम्य परिसर 'कामधेनु' एवं 'जयकुंजर' की उपमा को सार्थक करता है। ऐसे वातावरण में देश के 27 ख्यातनाम कवियों का एक साथ समागम परिसर को अध्यात्म और काव्य की सुर सरिता से सराबोर कर गया।

इस आयोजन में डॉ. अशोक बत्रा, डॉ. आदित्य जैन, डॉ. कमलेश जैन 'वसंत', करण सिंह जैन, केसरदेव मारवाड़ी, दीपा सैनी, नरेश शांडिल्य, प्रियंका राय 'ॐ नंदिनी', बलजीत कौर, मधु मोहिनी उपाध्याय, मनोज गुर्जर, महेश दुबे, योगेंद्र शर्मा, डॉ. रसिक गुप्ता, राजेश चेतन, राजेश विद्रोही, डॉ. राहुल अवस्थी, डॉ. रुचि चतुर्वेदी, श्रद्धा शौर्य, संदीप शजर, सपना सोनी, समोद सिंह (कमांडो), सरला मिश्रा, सरिता जैन, सोनल जैन, डॉ. सुरेंद्र जैन, हरीश हिन्दुस्तानी जैसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कवि-कवयित्रियाँ उपस्थित रहे।

प्रथम सत्र का शुभारंभ प्रातःकाल उद्घाटन सत्र से हुआ, जिसका विषय था 'अध्यात्म और कविता'। सत्र की अध्यक्षता संस्था अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ ने की। मुख्य अतिथि जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. बी.आर. दुगड़ एवं विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ कवि योगेंद्र शर्मा रहे। संस्था के मंत्री सलिल लोढ़ा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। विषय प्रवर्तन राजेश चेतन ने किया एवं बीज वक्तव्य डॉ. अशोक बत्रा ने प्रस्तुत किया। 'शासनश्री' मुनि विजयकुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी ने विषय पर पाथेय प्रदान किया। सत्र का संचालन डॉ. लिपि जैन ने तथा धन्यवाद ज्ञापन राजेंद्र खटेड़ ने किया। सत्र के पश्चात मुनि जयकुमार जी से सभी प्रतिभागियों का व्यक्तिगत परिचय हुआ।

द्वितीय सत्र का आयोजन परिसर स्थित साहित्य सदनम् में मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में हुआ, जिसका विषय था 'तेरापंथ का हिन्दी साहित्य में योगदान'। विषय प्रवर्तन सुप्रसिद्ध दोहाकार नरेश शांडिल्य ने किया, अध्यक्षता प्रो. राहुल अवस्थी ने की एवं विशिष्ट अतिथि संस्था के उपाध्यक्ष अजीत सिंह चोरड़िया रहे। तत्पश्चात खुला सत्र आयोजित हुआ, जिसमें वक्ताओं ने विषय के संदर्भ में सारगर्भित विचार एवं बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। मुनि जयकुमार जी ने तेरापंथ के हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु आधुनिक संसाधनों के समुचित प्रयोग पर बल दिया। सत्र का संचालन राजेश विद्रोही ने एवं धन्यवाद ज्ञापन साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष विजयराज आंचलिया ने किया। सत्र के पश्चात उपस्थित अतिथियों ने तेरापंथ साहित्य के संग्रह का अवलोकन किया।

तृतीय सत्र में संपोषणम् सभागार में विराट कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। अध्यक्षता अमरचंद लुंकड़ ने की एवं मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर महेन्द्र सिंह खड़गावत रहे। आगंतुक कवियों का स्वागत स्मृति चिन्ह एवं साहित्य भेंट कर किया गया। सम्मान सत्र का संचालन संस्था मंत्री सलिल लोढ़ा ने किया। तत्पश्चात विराट कवि सम्मेलन प्रारंभ हुआ, जिसमें देशभर से पधारे कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। संचालन अंतरराष्ट्रीय कवि राजेश चेतन ने अपनी चिर-परिचित शैली में किया।

चतुर्थ सत्र में 'शासनगौरव' साध्वी कल्पलता जी के सान्निध्य में साध्वियों एवं समणीवृंद द्वारा हस्तलिखित पांडुलिपियों, हस्तनिर्मित कलाकृतियों एवं सेवा-उपासना आधारित प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसे सभी सहभागियों ने सराहते हुए अवलोकन किया।

पंचम सत्र में विश्वविद्यालय स्थित आचार्य महाश्रमण सभागार में एक और विराट कवि सम्मेलन आयोजित हुआ। कुलपति प्रो. बी.आर. दुगड़ एवं संस्था अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़ ने अतिथि कवियों का स्वागत किया। स्वागत सत्र का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता नरेश शांडिल्य ने की एवं संचालन डॉ. कमलेश जैन 'वसंत' ने किया। छात्र-छात्राओं सहित उपस्थित जनसमूह ने प्रस्तुतियों का भरपूर आनंद लिया। मुनि जयकुमार जी एवं मुनि मुदितकुमार जी ने भी अपनी काव्य रचनाएं प्रस्तुत कीं।

षष्ठम समापन सत्र का आयोजन 'शासनश्री' मुनि विजयकुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, जिसमें मुनि जयकुमार जी ने एकल काव्य पाठ प्रस्तुत किया। तत्पश्चात अतिथि कवियों एवं विद्वानों ने आयोजन की समीक्षा प्रस्तुत की। आयोजन संयोजक इन्द्र बैंगानी ने प्रायोजक परिवार एवं सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। समापन सत्र का संचालन राजेश चेतन ने किया। मुनिश्री के मंगलपाठ के साथ 'काव्य की सुर सरिता' द्विदिवसीय साहित्यिक एवं काव्य आयोजन का समापन हुआ।

आयोजन की व्यवस्थाओं में मनोज लुनिया (कोलकाता), भंवर गोठी (जयपुर), डॉ. विजयश्री शर्मा, संजय बोथरा, सुशील मिश्रा, अभिषेक कासलीवाल सहित संस्था के सेवाकर्मियों का सराहनीय योगदान रहा।

चातुर्मास में होगा ज्ञान, दर्शन और चारित्र का उत्सव

गांधीनगर, बेंगलुरु।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी, नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी का चातुर्मासिक प्रवेश अनुशासन रैली के माध्यम से तेरापंथ भवन, गांधीनगर, बेंगलुरु में हुआ। इस रैली में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, प्रशिक्षिकाएं, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति एवं तेरापंथ सभा के अनेक श्रावक-श्राविकाएं जय घोष लगाते हुए उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। तेरापंथ भवन पहुँचते ही स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानकवासी श्रमणसंघ के वरुण मुनि जी, मूर्तिपूजक संघ से मुनि ध्यानयोग विजय जी एवं साध्वी पुण्यरत्नाश्रीजी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कर्नाटक सरकार के स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडूराव थे। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र से हुआ। स्वागत गीत तेरापंथ महिला मंडल, बेंगलुरु ज्ञानशाला एवं बहादुर सेठिया द्वारा प्रस्तुत किया गया।

श्रावक समाज को संबोधित करते हुए डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि चातुर्मास का समय धर्म आराधना का विशेष काल होता है। इसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप में अधिक से अधिक समय नियोजित करना चाहिए। जैन शास्त्रों में चातुर्मास को वर्षावास अथवा पावस प्रवास भी कहा गया है। उन्होंने बताया कि गांधीनगर तेरापंथ सभा भवन में श्रद्धालुओं के लिए चातुर्मासिक धर्मोत्सव के अंतर्गत ज्ञानोत्सव, दर्शनोत्सव, चारित्रोत्सव, जपोत्सव एवं तपोत्सव की आराधना करवाई जाएगी।

मुनिश्री ने रात्रिभोजन एवं जमीकंद के त्याग, नवकार महामंत्र तथा 'ॐ भिक्षु' जाप करने की प्रेरणा दी। उनके सान्निध्य में प्रतिदिन आगम आधारित प्रवचन एवं युवाओं के लिए रात्रिकालीन 'पावरफुल जैनिज्म' नामक विशेष प्रशिक्षण कक्षा की जानकारी दी।

मुनि ध्यानयोग विजय जी एवं वरुण मुनि जी ने चातुर्मास की मंगलकामना व्यक्त करते हुए श्रावक समाज को अधिकाधिक धर्म और ध्यान की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। मुनि आदित्य कुमार जी ने प्रेरणादायी गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में प्रेक्षा ध्यान-कल्याण वर्ष शिविर के बैनर का अनावरण रेणु कोठारी द्वारा किया गया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। ट्रस्ट अध्यक्ष सुशील चोरड़िया, अणुव्रत समिति के ललित बाबेल, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष पवन मांडोत तथा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम से पुष्पराज चौपड़ा ने अपनी भावनाएं साझा कीं। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने किया।

कार्यक्रम में महासभा से संजय बांठिया, नवनीत मुथा, युवा गौरव विमल कटारिया, बैंगलोर की विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारी सहित बैंगलोर की समस्त युवक परिषद, महिला मंडल, भिक्षु धाम, तुलसी चेतना केंद्र एवं अनेक सहयोगी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। रैली के संयोजक दिनेश छाजेड़ ने अंत में आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002** पर व्हाट्सअप अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::

सेवा संस्कार संगठन

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

सफल नेतृत्व के लिए आवश्यक है सभी को साथ लेकर चलना

धूरी, पंजाब।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में नवनिर्वाचित टीम का दायित्व बोध समारोह उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ विजय गीत के सामूहिक संगान से हुआ।

साध्वी कनकरेखा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि देश और समाज का भविष्य हमारी युवापीढ़ी है। युवा शक्ति परिवर्तन का आधार है — वह चाहे तो असंभव को भी संभव बना सकती है। युवाओं में जितनी जागरूकता, सक्रियता और कर्मठता होगी, वे उतनी ही गति से कार्यों को आगे बढ़ा सकेंगे। उन्होंने कहा कि सफल नेतृत्व के लिए यह आवश्यक है कि सभी को साथ लेकर चला जाए, हर परिस्थिति में संतुलन बनाए रखा जाए और कार्यकुशलता के साथ-साथ व्यवहार कुशलता, मिलनसारिता एवं मधुर भाषण जैसे गुणों का विकास किया जाए। उन्होंने युवाओं को धर्मसंघ की सेवा में समर्पित भाव से योगदान देने के लिए प्रेरित किया और अभातेयुप द्वारा निर्देशित कार्यक्रमों को नवाचार के साथ क्रियान्वित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि नवीन जैन और मनीष जैन के नेतृत्व में कार्यरत यह नई टीम अत्यंत उत्साही है और निश्चित ही दायित्वों का सम्यक निर्वहन करेगी।

साध्वी गुणप्रेक्षाजी और साध्वी संवरविभाजी ने अपने विचार कर्तव्य विषयक कविता और वक्तव्य के माध्यम से व्यक्त किए। नवनिर्वाचित अध्यक्ष नवीन जैन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि संगठन की शक्ति को ध्यान में रखते हुए, हम साध्वीश्री के मार्गदर्शन में एकजुट होकर कार्य करेंगे। सभा अध्यक्ष भीमसेन जैन ने नवीन जैन को शपथ दिलवाई। इसके पश्चात नवीन जैन ने अपनी संपूर्ण टीम को मंच पर आमंत्रित कर शपथ दिलाई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन कोषाध्यक्ष मोहित जैन ने किया। नवगठित कार्यकारिणी में अध्यक्ष नवीन जैन, मंत्री मनीष जैन, सहमंत्री जयंत जैन, सूचना एवं संचार मंत्री अर्हम जैन, कोषाध्यक्ष मोहित जैन तथा संगठन मंत्री वरुण जैन शामिल हैं।

विराट धम्म जागरण का हुआ आयोजन

बैंगलोर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकितकुमार जी के सान्निध्य में, तेरापंथ सभा गांधीनगर, बैंगलोर द्वारा आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष तथा तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रिंसेस श्राइन, पैलेस ग्राउंड में विराट धम्म जागरणा का भव्य आयोजन हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनि श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुई। तेयुप भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा ने मंगलाचरण एवं भावविभोर कर देने वाली प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं प्रायोजक निर्मलकुमार सुराणा ने अपना सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किया। सभा परिवार द्वारा उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

मुनि पुलकित कुमार जी ने इस अवसर पर आचार्य श्री भिक्षु के प्रति श्रद्धा समर्पित करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ की यशोगाथा का भावपूर्ण वर्णन किया। मुनि आदित्य कुमार जी ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव अभिव्यक्त किए।

सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत उद्बोधन दिया। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने सभा की गतिविधियों से अवगत कराते हुए 'गुरु दर्शनार्थ यात्रा संघ' की जानकारी दी। इस संघ यात्रा के प्रायोजक कुलदीप दीपक कात्रेला परिवार का अभिनंदन करते हुए बैनर का अनावरण भी किया गया।

कार्यक्रम में श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया ने अपने विशिष्ट अंदाज़ एवं स्वर लहरियों से भक्ति का अद्भुत वातावरण निर्मित कर सभी को भावविभोर कर दिया। सभा द्वारा उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। धम्म जागरणा के संयोजक नवनीत मुथा ने आभार ज्ञापन करते हुए विशेष सहयोगी कार्यकर्ताओं के योगदान की सराहना की।

इस आयोजन में महासभा से सहमंत्री मुकेश गादिया, सदस्य संजय बांठिया, बैंगलोर की समस्त तेरापंथ सभाएं, युवक परिषद, महिला मंडल, अणुव्रत समिति, तुलसी चेतना केंद्र, भिक्षु धाम, टीपीएफ पदाधिकारी एवं समस्त श्रावक-श्राविका समाज की विशाल उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री विनोद छाजेड़ एवं संयोजक नवनीत मुथा द्वारा किया गया।

'आओ खुशियों के फूल खिलाए' कार्यशाला का आयोजन

संगरूर।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में 'आओ खुशियों के फूल खिलाएं' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि व्यक्ति अकेला जन्म लेता है और अकेला ही मरता है, परंतु जीवन अकेले नहीं जीता — वह अनेक लोगों के साथ संबंध जोड़कर जीता है। यदि 'संबंध' शब्द को जीवन से निकाल दिया जाए, तो जीवन में जीवन ही नहीं बचेगा। हम संबंधों की दुनिया से अलग होकर जीवन नहीं जी सकते। इसलिए रिश्तों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम पहले रिश्तों को समझें। रिश्तों पर चर्चा करते हुए साध्वीश्री ने दो प्रकार के रिश्तों — इंटर रिलेशनशिप (बाह्य संबंध) और इंट्रा रिलेशनशिप (आंतरिक संबंध) की विवेचना की।

स्थानीय महिला मंडल और कन्यामंडल ने एक नए अंदाज में रोचक परिसंवाद की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को जीवंत बनाया। युवक परिषद् के सदस्यों द्वारा मंगलाचरण के माध्यम से वातावरण को मंगलमय बनाया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मध्यस्थप्रभा जी ने किया, जबकि साध्वी रुचिप्रभा जी और साध्वी गौतमप्रभा जी ने भावपूर्ण गीतों की प्रस्तुति देकर सभी को भावविभोर कर दिया।

तेयुप के अध्यक्ष अमन जैन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया और स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अमरनाथ जैन ने आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में जैन एवं जैनेत्तर समाज के भाई-बहनों ने भाग लिया।

पृष्ठ 10 का शेष

आत्मजागरण और सिद्धि...

पूर्वांचल सभा अध्यक्ष संजय कुमार सिंघी ने स्वागत वक्तव्य में सभी का अभिनंदन किया। इस अवसर पर दमकल मंत्री सुजीत बोस ने जैन धर्म के सिद्धांतों की प्रशंसा करते हुए चातुर्मास व्यवस्था हेतु हरसंभव सहयोग देने की भावना व्यक्त की। स्वागत भावाभिव्यक्ति के क्रम में पूर्वांचल सभा के मुख्य ट्रस्टी बाबूलाल गंग, तेरापंथी महासभा के पूर्व अध्यक्ष सुरेश गोयल, अणुविभा अध्यक्ष प्रताप दुगड़, कोलकाता सभा अध्यक्ष अजय भंसाली, अभातेममं की संगठन मंत्री रमण पटावरी, जीतो कोलकाता चैप्टर अध्यक्ष धर्मेन्द्र चोरड़िया, दिगम्बर जैन समाज से दिनेश जैन गंगवाल, तेयुप अध्यक्ष राजीव बोथरा, टीपीएफ पूर्वांचल अध्यक्ष विनोद दुगड़ तथा अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष नवीन दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा के मंत्री पंकज डोसी ने धन्यवाद ज्ञापन तथा कार्यक्रम का संयोजन प्रकाश चंडालिया द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 जुलाई - 03 अगस्त, 2025

'रूट्स एंड विंग्स' – संस्कारों की जड़ें, सपनों के पंख कार्यक्रम का आयोजन

बेंगलुरु वेस्ट।

फेमिना विंग द्वारा अर्हम भवन, विजयनगर में 'Roots and Wings – संस्कारों की जड़ें, सपनों के पंख' विषय पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में किया गया।

साध्वी संयमलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवन की मजबूत बुनियाद सच्चे संस्कारों में निहित होती है। उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आधुनिकता की दौड़ में जीवन मूल्यों और संस्कारों को न भूलें। केवल मोबाइल और ब्रांडेड जीवनशैली अपनाने से सफलता नहीं मिलती, बल्कि जीवन में दिशा और चरित्र का होना आवश्यक है। उन्होंने समझाया कि यदि मनुष्य के जीवन में आत्मिक और पारिवारिक संतुलन है, तो वह हर परिस्थिति का सहजता से सामना कर सकता है।

कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मार्दवयशा जी ने किया। उन्होंने S3 मॉडल (समझ, सम्मान, समय) को परिवार का आधार बताते हुए कहा कि ये तीनों बातें हर परिवार को एकजुट रखने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। साध्वी रौनकप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा – यदि संयुक्त परिवार नहीं है, तो संयुक्त दर्द होगा।

कार्यक्रम में इंटरऐक्टिव क्विज़, पोल और प्रश्नोत्तरी जैसे संवादात्मक माध्यमों का उपयोग किया गया, जिसमें सभी श्रोताओं ने पूरे मनोयोग से भाग लिया। कार्यक्रम में दीपिका जैन और स्वेता नाहटा की विशेष भूमिका रही। श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही और सभी ने इस आयोजन की सराहना की।

कार्यक्रम में टीपीएफ फेमिना विंग की संयोजिका दीक्षा जैन, टीपीएफ अध्यक्ष ललित बेगानी, टीपीएफ साउथ जोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी सहित टीपीएफ सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

इस अवसर पर 'मिशन दृष्टि' आई कैंप में सहयोग देने वाले अस्पतालों और डॉक्टर्स की टीम का सम्मान जैन पट्ट एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर किया गया।

स्वयं से मिलने का समय है चातुर्मास

जोधपुर।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी कुंदनप्रभा जी ठाणा-5 का पावस प्रवास हेतु मंगल आगमन गुलाबनगर से विहार कर नरपतनगर स्थित सुरेश जीरावला के निवास स्थान से भव्य शोभायात्रा के साथ तेरापंथ भवन, अमरनगर में हुआ।

महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर सभाध्यक्ष सुरेश जीरावला, युवक परिषद अध्यक्ष मनसुख संचेती, महिला मंडल मंत्री चेतना घोड़ावत, जगदीश धारीवाल एवं अनिल संचेती ने गीतिका एवं भाषण के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। विनय तातेड़ ने साध्वी सत्यवती जी द्वारा प्रेषित शुभकामना सन्देश का वाचन किया। जोधपुर शहर के अध्यक्ष मूलचंद तातेड़ ने गत वर्ष के चातुर्मास का स्मरण करते हुए इस वर्ष की सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

साध्वी कुंदनप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा—'सारा वर्ष हम दूसरों से मिलने जाते हैं, किंतु चातुर्मास का पर्व स्वयं से मिलने और परमात्मा से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।'

साध्वीवृंद द्वारा 'महाश्रमण मॉल' के माध्यम से यह बताया गया कि चातुर्मास में श्रावकों को किन-किन आध्यात्मिक गतिविधियों में संलग्न रहना चाहिए। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं संयोजन सभा मंत्री महावीर चोपड़ा द्वारा किया गया।

बोलती किताब

आचार्य भिक्षु : जीवन-दर्शन

मोक्ष है - सूक्ष्म शरीर से मुक्ति। उसके बिना स्थूल शरीर नहीं होता । उसके अभाव में इन्द्रियां और मन नहीं होते । इनके बिना विषय नहीं होता । विषय के अभाव में राग-द्वेष नहीं होते । राग-द्वेष के बिना कर्म का बंध नहीं होता । बन्धन के बिना संसार नहीं होता, जन्म-मरण की आवृत्ति नहीं होती । मोक्ष से संसार नहीं होता और संसार से मोक्ष नहीं होता, इसलिए मोक्षार्थी व्यक्ति को न जन्म की इच्छा करनी चाहिए और न मृत्यु की । उसके लिए अभिलषणीय है । संयम । संयम से जीवन-मृत्यु की आवृत्ति का निरोध होता है इसलिए वह मोक्ष का उपाय है, मोक्ष है ।

आचार्य भिक्षु तार्किक-शक्ति से सम्पन्न थे । उन्होंने साध्य-साधन का विवेचन केवल आगमों के आधार पर ही नहीं किया है, स्थान-स्थान पर उसे तर्क से भी पुष्ट किया । धर्म को कसौटी पर कसते हुए उन्होंने बताया—धर्म मुक्ति का साधन है । मुक्ति का साधन मुक्ति ही हो सकती है, बंधन कभी उसका साधन नहीं होता । बंधन भी यदि मक्ति का साधन हो जाए तो बंधन और मुक्ति में कोई भेद ही न रहे । ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के सिवाय कोई मुक्ति का उपाय ही नहीं है । इसलिए ये चार ही धर्म हैं ! शेष सब बन्धन के हेतु हैं । जो बंधन के हेतु हैं, वे मोक्ष धर्म नहीं हैं । धर्म मुक्ति का साधन है और स्वयं मुक्ति है ।

आचार्य भिक्षु के पास श्रद्धा का भी अमित बल था । वे जितने तार्किक थे उतने ही श्रद्धालु थे । श्रद्धा और तर्क के संगम में ही व्यक्ति का दृष्टिकोण पूर्ण बनता है । कुसुम्बा स्वयं गलकर दूसरों को रंगता है । भक्त हृदय का गीलापन दूसरों को स्निग्ध कर देता है । आचार्य भिक्षु की अटल आस्था इस कोटि की है कि वे भगवान् महावीर और उनकी वाणी पर स्वयं को न्यौछावर कर चलते हैं । उनके समर्पण की भाषा यह है—प्रभो ! आपने सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप को मुक्ति का मार्ग कहा है । मैं इनके सिवा और किसी तत्त्व को धर्म नहीं मानता ।

आचार्य भिक्षु बौद्धिक पुरुष नहीं थे । वे अनुभव पुरुष थे । उन्होंने अनुभव के स्तर पर सत्य को उपलब्ध किया । बुद्धि के स्तर पर सत्य की व्याख्या करने वाले सत्य को सीमित कर देते हैं । वे सत्य को बांटदेते हैं, तोड़ देते हैं, उसे सामयिक बना देते हैं । बुद्धि का सत्य हमेशा सामयिक होता है । जैसे-जैसे समय के चरण आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे सामयिकसत्य पुराना होता जाता है ।पुराने का अर्थ है—वर्तमान के लिए अनुपयोगी, व्यर्थ। जैसे-जैसे समय के चरण आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे शाश्वत सत्य नया होता जाता है । नए का अर्थ है—आज के लिए उपयोगी, सार्थक । जो व्यक्ति प्रकाशमय बन जाता है, आत्म-केन्द्रित हो जाता है । और जिसके लिए आगे पीछे, पहले और बाद में, आत्मा के अतिरिक्त कुछ शेष रहता ही नहीं, वह नहीं जानता कि यातना और पीड़ा क्या । होती है ? भूख और प्यास क्या होते हैं ? जो व्यक्ति यातनाओं को जानता है, यातनाओं का अनुभव करता है, वह वास्तव में यातना को सह नहीं सकता । कष्टों को जानने वाला, संवेदना करने वाला, कष्टों को सह नहीं सकता ।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

संयोगों से विमुक्त...

धर्म एक कल्पवृक्ष के समान है – जिससे भौतिक सुविधाएं भी प्राप्त होती हैं और आध्यात्मिक फल भी मिलता है। तात्त्विक दृष्टिकोण से देखें तो धर्म से संवर और निर्जरा होती है – यह आध्यात्मिक लाभ है। वहीं धर्म से पुण्य का बंध होता है – यह भौतिक लाभ है। मोक्ष पाने का मुख्य साधन संवर और निर्जरा हैं। मोक्ष प्राप्त करने के लिए अंततः पुण्य को भी छोड़ना होगा – पुण्य लेकर जीव मोक्ष में नहीं जा सकता।

धर्म से शांति प्राप्त की जा सकती है। यदि हम क्रोध न करें, घमंड न करें, तो स्वयं भी शांत रहेंगे और दूसरों को भी शांति मिल सकती है। धर्म का एक तत्त्व है – समता। अनुकूलता या प्रतिकूलता आने पर यदि हमारे भीतर समता है तो हम दुखी नहीं होंगे। धर्म हमें आत्मिक सुख प्रदान करता है। धर्म से चित्त में समाधि आती है और संवर-निर्जरा के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति होती है। भौतिक अनुकूलताएं भी धर्म से प्राप्त हो सकती हैं। पूज्यप्रवर के मंगल प्रवचन के पूर्व साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने जनता को उद्बोधित करते हुए कहा – यदि आत्मा को जानना और पहचानना है, तो एकाग्रता बढ़ानी होगी और पूरे मनोयोग से साधना करनी होगी। जो आत्मा को जान लेता है, वह सबको जान लेता है।

प्रवचन उपरांत मुनि राजकुमारजी ने तपस्या विषयक एक भावपूर्ण गीत की प्रस्तुति दी, तथा मुनि मदनकुमारजी ने सभी श्रद्धालुओं को विविध तपस्याओं के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात सिरियारी संस्थान से जुड़े श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री की सन्निधि में बैनर का अनावरण कर उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 14 का शेष

एकमात्र धर्म ही है...

इस अवसर पर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा, आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में, 'मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने अपनी भावना और वक्तव्य प्रकट किए। इसी क्रम में इसरो के निदेशक निलेश देसाई भी आचार्यश्री के दर्शनार्थ पहुंचे। उन्होंने अपने विचार रखते हुए विद्यार्थियों को प्रेरणादायी संदेश प्रदान किया।

आचार्यश्री ने मेधावी विद्यार्थियों को मंगल आशीर्वाद एवं पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि— 'आदमी के जीवन में शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। अज्ञानता स्वयं में एक अभिशाप है, अंधकार है; जबकि ज्ञान एक वरदान और प्रकाश स्वरूप है। शिक्षा जगत में विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय जैसे अनेक उपक्रम दिखाई देते हैं, परंतु सभी विद्यार्थी समान क्षमता वाले नहीं होते—कोई अल्पमेधी होते हैं तो कोई अत्यंत मेधावी भी।'

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा संचालित यह सम्मान समारोह विद्यार्थियों को ज्ञान, जागरूकता और चरित्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करता है।

शिक्षा के साथ-साथ जीवन में अच्छे संकल्पों की भी आवश्यकता होती है—जैसे नशामुक्त जीवन, नैतिकता और आत्मविकास की भावना। जब जीवन में लक्ष्य के साथ संकल्प भी जुड़ जाए, तो संकल्प से सिद्धि की प्राप्ति संभव हो सकती है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 जुलाई - 03 अगस्त, 2025

सम्यक्त्व को बनाएं शक्तिशाली और निर्मल : आचार्य श्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
18 जुलाई, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकाधिशम अधिशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो आगम' के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि – 'एक और बहुत का परस्पर संबंध है। एक का प्रभाव बहुतों पर पड़ सकता है और बहुतों का प्रभाव एक पर पड़ सकता है।' जो एक को झुकाता है, वह बहुतों को झुकाता है और जो बहुतों को झुकाता है, वह एक को झुकाता है।

व्यवहार में हम देखें तो जैसे कोई साधु किसी नगर में जाता है, प्रवचन करता है, लोगों को धर्म और अध्यात्म समझाने का प्रयास करता है। यदि वहाँ का राजा या मुखिया साधु का प्रवचन श्रवण कर धर्म को स्वीकार कर लेता है और वह साधु का बहुमान करता है, वंदन करता है, तब नगर की जनता जब राजा की साधु के प्रति भक्ति देखती है, तो वह भी राजा को देखकर प्रवचन में आने लगती है और साधु को वंदन, नमस्कार करने लगती है। इस प्रकार एक को झुका लिया तो बहुतों को झुका लिया।

जब बहुत लोग एक ही दिशा में जाते हुए दिखाई देते हैं, तो वहाँ का मुखिया सोचता है कि ये सब लोग कहाँ जा रहे हैं, और जब उसे पता चलता है कि वे किसी बड़े संत के प्रवचन को सुनने जा रहे हैं, तो मुखिया के मन में भी यह विचार आ सकता है कि इतनी जनता जा रही है तो मैं भी चलूं। इस प्रकार बहुतों को जो झुकाता है, वह एक को भी झुका सकता है। यह व्यावहारिक संदर्भ है।

इसी बात को यदि हम तात्त्विक संदर्भ में समझें, तो एक मोहनीय कर्म यदि है, तो अन्य सातों कर्मों को भी रहना ही पड़ेगा; वे मोहनीय कर्म को छोड़कर नहीं जा सकते। एक मोहनीय कर्म यदि क्षीण हो गया, तो ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय – ये तीनों कर्म भी चले जाएंगे और शेष चार अघाती कर्म भी समाप्त हो जाएंगे।मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृतियाँ बताई गई हैं – सोलह कषाय, नौ नो-कषाय और तीन दर्शन-मोह। इनमें यदि क्रोध को क्षीण या उपशम कर दिया जाए, तो मोहनीय कर्म की अन्य प्रकृतियाँ भी क्षीण हो सकती हैं। इस प्रकार एक को यदि नष्ट कर दिया जाए, तो बहुतों का भी नाश हो सकता है।

गुणस्थान के क्रम में चौथे गुणस्थान में क्षायिक, औपशमिक या क्षायोपशमिक सम्यक्त्व हो सकता है। सातवें गुणस्थान के बाद चारित्र मोहनीय की प्रकृति का जो क्रम बनता है, वह दो हैं – एक उपशम श्रेणी और दूसरा क्षपक श्रेणी। जो साधु उपशम श्रेणी के मार्ग से चलता है, वह कषायों को क्षीण नहीं करता, केवल दबाता है। वह ग्यारहवें गुणस्थान तक जा सकता है, आगे मार्ग नहीं है। उपशम श्रेणी का मार्ग दबाने का है, क्षीण करने का नहीं। जो दबाया गया है, वह बाद में उभरेगा ही। ऐसे साधु को ग्यारहवें गुणस्थान से लौटना पड़ेगा।

जो साधु क्षपक श्रेणी का मार्ग अपनाता है, वह कषायों को क्षीण करता हुआ आठवें से नवें, दसवें और फिर सीधा बारहवें गुणस्थान में पहुँचता है और वहाँ मोहनीय कर्म का सम्पूर्ण क्षय हो जाता है। यह एक बड़ी सफलता है। इसके बाद तेरहवां गुणस्थान शीघ्र आता है और साधु को केवलज्ञान, केवलदर्शन तथा निरंतराय हो जाता है। चारों घाती कर्म नष्ट हो जाते हैं।

तेरहवें गुणस्थान में चार अघाती कर्म – वेदनीय, नाम, गोत्र और आयुष्य – रहते हैं। चौदहवें गुणस्थान की समाप्ति के साथ ही ये शेष चारों अघाती कर्म भी समाप्त हो जाते हैं। आत्मा निष्कर्म बन जाती है और मोक्ष में विराजमान हो जाती है।

इस प्रकार 'आयारो' में कहा गया है – 'जे एगं नामे से बहुं नामे, जे बहुं नामे से एगं नामे।' एक कषाय को यदि झुका दिया, नष्ट कर दिया, तो बहुत कषायों का भी नाश हो गया। और बहुतों का नाश हुआ तो एक मोहनीय कर्म का भी नाश हो गया। यह एक और बहुत का परस्पर प्रभाव है, निष्पत्ति है।

प्रश्न यह है कि मोहनीय कर्म को साधु या गृहस्थ किस प्रकार कमजोर करें? वर्तमान समय में मोहनीय कर्म का पूर्ण क्षय परम्परागत मान्यता के अनुसार इस भरत क्षेत्र में संभव नहीं है, परन्तु उस दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। यदि जीव को एक बार क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त हो गया, तो वह अनंतकाल तक कभी भी नष्ट नहीं होगा – न संसारी अवस्था में और न ही मोक्ष में।

सम्यक्त्व को शक्तिशाली और मजबूत बनाने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं:

1. यह विश्वास रखना कि – 'वही सत्य है जो जिनों, केवलियों ने प्रवर्तित किया है, वह निःशंक है।' अर्थात् जो शुद्ध सत्य है, उसका हमें समर्थन करना चाहिए। जो भी शुद्ध साधु हैं, उन्हें मेरा नमस्कार है, चाहे वे किसी भी संप्रदाय या वेश में हों।

2. कषायों को मंद करना – क्रोध, मान, माया, लोभ को कमजोर करने का अभ्यास करना।

3. तत्त्वों को अनाग्रह भाव से समझने का प्रयास करना – अर्थात् समय के साथ चिन्तन में परिवर्तन और विकास संभव है, अतः अपने मत के प्रति दुराग्रह नहीं रखना चाहिए।

इन तीन बातों से हमारे सम्यक्त्व की निर्मलता बनी रह सकती है और पुष्ट हो सकती है। देव, गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा, निर्ग्रन्थ भाव और वीतराग मार्ग पर दृढ़ निष्ठा बनी रहनी चाहिए। प्रलोभन और भय से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। पूज्य प्रवर की मंगल सन्निधि में ठाणे (महाराष्ट्र) के पूर्व सांसद संजीव नाईक ने आचार्यश्री के दर्शन कर अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं, जिन पर आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के मंत्री मनोज सिंघवी एवं जीवन विज्ञान प्रकल्प से जुड़े रमेश पटावरी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के पर्यवेक्षक मुनि मननकुमारजी ने अपने विचार रखे। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोत ने भी अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया।

एकमात्र धर्म ही है दुःख-मुक्ति का उपाय : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
19 जुलाई, 2025

प्रेक्षा विश्व भारती के वीर भिक्षु समवसरण में तेरापंथ सरताज युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के आधार पर जनता को पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि इस संसार में दुःख भी है तो सुख भी मिलता है। दुःख बीमारी, बुढ़ापा, आर्थिक समस्या आदि कई रूपों में हो सकता है। सुखों की ओर ध्यान दिया जाए तो उसकी भी सूची बन सकती है कि खाने को अच्छा मिलता है, अच्छे कपड़े मिलते हैं, समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है आदि। इस प्रकार संसार में दुःख और सुख दोनों मौजूद हैं। कोई कह दे कि मैं दुःख को आने नहीं दूंगा, तो ऐसा संभव नहीं है।

बीमारी को दुःख कहा गया है। शास्त्रों में जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा, रोग—इन सभी को दुःख कहा गया है। कोई भी इस बात की गारंटी नहीं ले सकता कि जीवन में कभी बीमारी नहीं आएगी और आयुष्य सौ वर्षों का होगा। दुःख जीवन में कभी भी आ सकते हैं। इसलिए आदमी को अपने दुःख का कारण जानना

चाहिए, जिससे उसके कारण का निवारण किया जा सके, लेकिन यह कहना कि दुःख कभी आएंगे ही नहीं—यह कोई गारंटी नहीं ले सकता।

आयारो में बताया गया है कि दुनिया के इस दुःख को जानकर उसके कारण को दूर करने का प्रयास करो। बहुत बड़े धनाढ्य या सबसे बड़े सत्ताधीश को भी बीमारियाँ घेर लेती हैं। मृत्यु को भी कोई पहरेदार बिठाकर रोका नहीं जा सकता। एकमात्र धर्म का तत्व ही दुःख-मुक्ति का उपाय है। धर्म के द्वारा ही आत्मा एकांत सुख वाले मोक्ष को प्राप्त कर सकती है।

दुनिया में पुरुषार्थ का महत्त्व है, परन्तु पुरुषार्थ से सब कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता। पुरुषार्थ की भी एक सीमा होती है, उसके बाद उसकी क्षमता समाप्त हो जाती है। कई बार पुरुषार्थ करने पर भी फल मिले या न मिले, यह निश्चित नहीं होता। किसी पुरुषार्थ का फल तत्काल मिलेगा ही, यह नहीं कहा जा सकता—जैसे परीक्षा दी जाती है, उसमें सफलता मिले भी और न भी मिले। फिर भी, जहाँ तक संभव हो, पुरुषार्थ करते रहना चाहिए।

दुःख भी है, दुःख का कारण भी है। यदि हम दुःख को पाप मानें, तो दुःख का मूल कारण है—आश्रव। आदमी को दुःख से मुक्त होने के लिए उसके कारणों का निवारण करने का प्रयास करते रहना चाहिए। यदि सुख मोक्ष है, तो दुःख-मुक्ति का उपाय है—संवर और निर्जरा। यदि मनुष्य दुःख के निवारण पर ध्यान दे, तो वर्तमान जीवन भी सुखी बन सकता है।

मंगल प्रवचन के उपरांत, आचार्यश्री ने 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान एवं उसका व्याख्यान किया। तत्पश्चात मुनि सत्यकुमारजी ने 'आरोहण' कार्यशाला की संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की। मुनि मदनकुमारजी ने आचार्यश्री की सन्निधि में प्रारंभ होने वाले पचरंगी तप के विषय में विस्तृत जानकारी दी।

(शेष पेज 13 पर)

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

धर्मक्रांति के बीज

संत भीखणजी ने स्थानकवासी सम्प्रदाय के आचार्य रुघनाथजी के पास दीक्षित होकर आगमों का अध्ययन किया। उन्होंने आगमिक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला- ये प्रवृत्तियां साधुत्व की विराधनाएं हैं–

- आधाकर्मी (साधु के निमित्त बने हुए), स्थापित (साधु के निमित्त से स्थापित किए हुए) स्थानक का उपयोग किया जा रहा है।
- क्रीत (साधु के निमित्त से खरीदा हुआ) और नीरोग अवस्था में भी नित्यपिंड (प्रतिदिन एक घर से आहार) लिया जा रहा है।
- स्थानक में पुस्तकें छोड़कर विहार कर दिया जाता है। पीछे से उनकी प्रतिलेखना भी नहीं होती।
- पारिवारिकजनों की अनुमति के बिना ही दीक्षा दी जा रही है।
- विवेक शून्य और नासमझ पुरुष-स्त्रियों को दीक्षा दी जा रही है।
- मर्यादा से अधिक उपधि-वस्त्र और पात्र रखे जा रहे हैं।
- जानबूझकर दोष सेवन की स्थापना की जा रही है।
- मान्यता भी सही नहीं है तथा आचार भी सम्यक् नहीं है।

ये चिन्तन के बीज संत भीखणजी के मानस में चिरकाल तक पलते रहे और ये परिपक्व होकर धर्मक्रांति के बीज बन गए।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

क्यों करे सामायिक?

शरीर के लिए सब-कुछ पर आत्मा के लिए क्या? एक शिष्य ने गुरू से यह प्रश्न पूछा कि क्या सचमुच आत्मा कि खुराक होती है, क्या आत्मा को भी पोषण मिलता है? गुरू ने जवाब दिया, हां। शिष्य ने उत्सुकतावश पुनः प्रश्न किया वह कैसे संभव है? गुरू ने जवाब दिया आश्रव का निरोध एक ऐसा उपाय है जिससे आत्मा को पोषण मिलता है। 'सामायिक' आश्रव निरोध का एक सशक्त माध्यम है। सामायिक अर्थात् 'समय' की साधना। समय अर्थात् आत्मा। जो क्रिया आत्मा के लिए हो या आत्मा के द्वारा हो वह सामायिक है।

सामायिक से Tripple 'S' की सिद्धि होती है– समता, सहिष्णुता, सावद्य विरति। आज के युग में इन तीनों का होना अत्यधिक आवश्यक हो गया है। समता अर्थात् तटस्थ भाव, तेरी-मेरी से परे, राग द्वेष का अभाव। सहिष्णुता अर्थात् पारस्परिक सौहार्द-उदारता। सावद्यविरति अर्थात् पाप कार्य से विरत होना। यदि ये तीनों गुण या यो कहें कि यदि ये तीनों स्वभाव मनुष्य में आ जाए तो वह नर नारायण बन सकता है वह इन्सान भगवान बन सकता है। अतः कर्म शुद्धि के लिए, कर्म मुक्ति के लिए सामायिक आवश्यक है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी

जयाचार्य की जुबानी

जैसा गुड़ वैसा मिठास

पीपाड़ में गेवीराम नाम का चारण 'भक्त' था। लोगों में पूजा जाता था। वह अन्य भक्तों को लापसी खिलाता था। उसे लोगों ने बहकाया– 'तुम भक्तों को लापसी खिलाते हो, उसमें भीखणजी पाप कहते हैं।'

तब वह भक्त गेवीराम हाथ में घोटा ले, घुंघरु बजाता हुआ, स्वामीजी के पास आया और बोला– 'हे भीखण बाबा! मैं भक्तों को लापसी खिलाता हूं, उसमें क्या होता है।'

स्वामीजी बोले– 'लापसी में जैसा गुड़ डाला जाता है, वह वैसी ही मीठी होती है।'

यह सुन वह बहुत राजी हुआ, भीखण बाबा ने बहुत अच्छा उत्तर दिया। लोग बोले– 'भीखणजी ने मानो पहले ही उत्तर घड़ रखा था।'

क्या आप जानते हैं?

अग्नि पर बर्तन रखकर उबाले हुए अथवा माइक्रोवेव में गर्म किए गए फल व सब्जियां अचित्त माने जाते हैं।

अचित्त पानी में सेव आदि के निमित्त सचित्त नमक (कालापन रोकने के लिए) डाला जाए तो उसे सचित्त माना जाता है। काले नमक के अलावा सभी प्रकार के नमक सचित्त माने जाते हैं।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह कम से कम 3 दिन पौरसी करने का प्रयास करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 जुलाई - 03 अगस्त, 2025

कषाय क्षीण होने पर ही होती है मुक्ति की प्राप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
15 जुलाई, 2025

आयारो आगम पर मंगल देशना फरमाते हुए परम पूज्य गुरुदेव, तेरापंथ के एकाधिशम अधिशास्ता ने फरमाया – 'अध्यात्म की साधना आत्मिक सुख प्राप्ति का मार्ग है, और इस साधना में कषाय-विजय एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और केन्द्रीय तत्त्व है।' कषाय चार हैं – क्रोध, मान, माया और लोभ। कषायों के संस्कार अनन्त काल से प्राणी के साथ जुड़े हुए हैं। जब कषायों का क्षय हो जाता है, तब मुक्ति निकट हो जाती है।

दिगंबर बनने मात्र से, श्वेतांबर बनने मात्र से, तार्किक बनने मात्र से मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। कषाय क्षीण होने पर ही मुक्ति प्राप्त होती है। यदि कोई जैनेत्तर व्यक्ति हो, गृहस्थ वेश वाला व्यक्ति हो – उसे भी कषाय क्षीण होने पर मुक्ति मिल सकती है। भगवान महावीर ने भी साधना की, और जब तक उनकी कषायों से मुक्ति नहीं हुई, उन्हें केवलज्ञान प्राप्त नहीं हुआ।

व्यवहार में भी हम देखें तो क्रोध अच्छी चीज नहीं है। गुस्सा, प्रीति का नाश करने वाला होता है। परिवार हो, समाज हो, राष्ट्र हो – कहीं भी आवेश नहीं करना चाहिए। गुस्से से बचने का प्रयास करना चाहिए। संतों के लिए कहा गया है कि संत वह होता है जो शांत होता है।

अहंकार से भी बचने का प्रयास होना चाहिए – ज्ञान, अर्थ, रूप, बल, सत्ता, तपस्या आदि का अहंकार नहीं करना चाहिए। माया नहीं करें, ऋजुता (सरलता) का भाव रखें। लोभ से भी बचने का प्रयास हो – अपनी इच्छाओं का सीमाकरण करें और संयम रखें। आदमी को अपने चरित्र को अच्छा बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए आयारो आगम में कहा गया है कि साधक को क्रोध, मान, माया और लोभ को कम करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यप्रवर की सन्निधि में गुजरात के गृह राज्य मंत्री हर्ष संघवी उपस्थित हुए। उन्होंने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि – 'आचार्यश्री महाश्रमणजी के लगातार दो चातुर्मास गुजरात की धरा को प्राप्त हुए हैं, यह पूरे गुजरात की जनता के लिए गौरव की बात है। आपके चातुर्मास से अनेक लोगों को लाभान्वित होने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। मैं सम्पूर्ण गुजरातवासियों की ओर से ऐसा सौभाग्य प्रदान करने के लिए आपका आभार प्रकट करता हूँ।'

दुःख से स्पृष्ट होने पर भी नहीं बनें व्याकुल : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
14 जुलाई, 2025

प्रेक्षा विश्व भारती के वीर भिक्षु समवसरण में उपस्थित जनता को तेरापंथ अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आचारांग भाष्यम्' के माध्यम से पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि दुःख से स्पृष्ट होने पर व्याकुल नहीं बनें। आदमी के जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार की परिस्थितियां आ सकती हैं। साधु जीवन में भी प्रतिकूल परिस्थितियां आ सकती हैं, जैसे कभी स्थान अनुकूल न मिले, गर्मी में हवादार और सर्दी में गर्म स्थान न मिले, आँगन टूटा-फूटा हो, कभी आहार पूरा न मिले, कभी कुछ लोग निंदा करने वाले, गालियां देने वाले मिल जाएं, विरोध करने वाले मिल जाएं। ऐसी स्थितियों में समता और शांति बनाए रखना साधु का धर्म है।

गृहस्थ जीवन में भी कठिनाइयां आ सकती हैं, जैसे आर्थिक परिस्थिति बिगड़ जाए, व्यापार में घाटा हो जाए, कर्ज हो जाए, व्यापार ठप हो जाए। ऐसी स्थिति में व्यक्ति परेशानी का अनुभव कर सकता है। तब भी उसे चाहिए कि वह अपने मन को शांत रखने का प्रयास करे, क्योंकि समस्या और मानसिक दुःख एक नहीं हैं। समस्या हो सकती है, लेकिन उससे मानसिक रूप से व्याकुल बनना आवश्यक नहीं है। मानसिक रूप से व्यक्ति शांत रहे। किसी समस्या के आने पर उसे दूर करने का प्रयास करें, लेकिन उससे दुःखी न हों। यह सोचना चाहिए कि यह कोई कर्मों का योग हो सकता है। कई बार गृहस्थ के सामने पारिवारिक समस्याएं भी आ सकती हैं। इन समस्याओं को कैसे ठीक करें, कैसे निपटें, इसके समाधान का प्रयास करें, लेकिन इनसे आकुल-व्याकुल न बनें। कभी मानसिक कठिनाई भी आ सकती है, जैसे अपेक्षित पदोन्नति न होना या किसी अन्य को पदोन्नति मिल जाना। इससे भी परेशान नहीं होना चाहिए। जहां हैं, वहां नैतिकता और ईमानदारी बनाए रखें।

दो प्रकार के दुःख हो सकते हैं – शोक और जरा। एक मानसिक परेशानी और एक शारीरिक समस्या। जरा और शोक की स्थिति में मनोबल अच्छा बना रहे और मानसिक संतुलन तथा धैर्य बना रहे। यही सफलता की विशेष बात होती है कि विपरीत परिस्थिति में भी आदमी का धैर्य न डोले, मन की शांति बनी रहे। धैर्य रखें, शांति रखें, समता भाव रखें और यथायोग्य समाधान का प्रयास करें। यदि सहिष्णुता नहीं होती है तो व्यक्ति समस्याएं आने पर मन से दुःखी बन सकता है।

अध्यात्म की साधना की निष्पत्ति यह होनी चाहिए कि विपरीत परिस्थितियों में भी मन विशेष रूप से दुःखी न बने, सहज शांति बनी रहे। क्योंकि कर्मों के योग से विपरीत परिस्थितियां जीवन में आ सकती हैं, और किए हुए कर्मों का फल सामान्यतः भोगना ही पड़ता है। यह सोचना चाहिए कि मेरे कर्म हल्के हो रहे हैं, इन परिस्थितियों को मैं समता से सहन करूं। चाहे साधु हो या गृहस्थ, विपरीत परिस्थितियां दोनों के सामने आ सकती हैं। यदि हमारा चिंतन सही रहे, तो हम विपरीत परिस्थिति को आसानी से झेल सकते हैं।

यह साधना और अध्यात्म की बात है कि प्रतिकूलता में भी तटस्थ और शांत बने रहें। दुःख है, तो उसका कारण भी है। दुःखों से मुक्ति मिल सकती है और दुःख-मुक्ति का उपाय भी है। नव तत्वों में देखें – वहां पाप नाम का तत्व है। जब पाप उदय में आता है, तब व्यक्ति दुःखी बनता है। यदि पाप को दुःख मानें, तो दुःख का कारण है – पांचवां तत्व आश्रव। दुःख-मुक्ति है – नवां तत्व मोक्ष। मोक्ष का उपाय भी है – छठा तत्व संवर और सातवां तत्व निर्जरा। इन नव तत्वों में धर्म का सार समाहित है। यदि व्यक्ति इन नव तत्वों को अच्छी तरह समझ ले, तो चित्त में समाधि और शांति रह सकती है। जब हम इन शास्त्रों की कल्याणी वाणी को सुनते, पढ़ते और चिंतन करते हैं, तो हमारा दृष्टिकोण भी प्रशस्त बन सकता है और कठिनाई को झेलना भी आसान हो जाता है। यदि तन में कठिनाई है और मन मजबूत है, तो तन की कठिनाई का प्रभाव भी कम हो सकता है।

नौ तत्त्व

1. जीव	6. संवर
2. अजीव	7. निर्जरा
3. पुण्य	8. बंध
4. पाप	9. मोक्ष
5. आश्रव	----

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के जीवन को देखें, तो उनके सामने भी अनेक विपरीत परिस्थितियां आईं, परंतु उनका मनोबल, समता भाव और हिम्मत बनी रही। कठिनाइयां हों, तो हों, लेकिन अपने कार्य करते रहो। इसलिए आयारो में जो कहा गया – सहिष्णु मुनि दुःख मात्र से स्पृष्ट होने पर व्याकुल मति वाला न बने। साधु और गृहस्थ, दोनों व्याकुल न बनें, मन से दुःखी न बनें। चिंतन प्रशस्त और सम्यक् हो। यदि हम पॉजिटिव और रियल रहें, तो कठिनाइयों को झेलना आसान हो सकता है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त मुनि मदनकुमारजी ने तपस्या के संदर्भ में जानकारी प्रदान की। प्रभा सुरेन्द्रमल लोढ़ा ने अपने शोध ग्रंथ 'आचार्य महाप्रज्ञ एवं अनासक्त चेतना' को पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित करते हुए अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।